



facebook.com/  
thebharatshri



twitter.com/  
thebharatshri



website  
thebharatshri



राष्ट्र को एक सूत्र में बांधते हैं हम

# भारतश्री

राष्ट्रीय हिंदी साप्ताहिक



सोना फिर छू गया नया आसमान

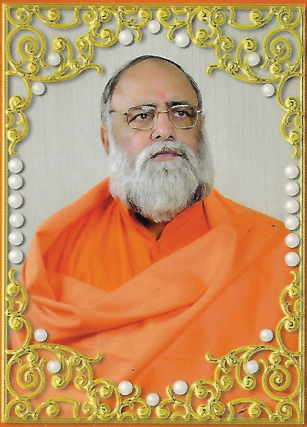
सोमवार, 20 अक्टूबर 2025 • वर्ष 7 • अंक 13 • मूल्य: 5 रुपए



भगवान ब्रह्मा जी ने पाठ के बारे में कहा है कि यह साक्षात् अद्भुत, अलौकिक विज्ञान है इसका पाठ करने से, इसे जानने व समझने से व धारण करने मात्र से त्रिलोक पर भी विजय प्राप्त की जा सकती है। सबको सारे कष्टों का निवारण होता है।

पेज-10-11

सद्गुरु वाणी



विश्व भर में होने वाले प्रभु कृपा दुख निवारण समागम केवल प्रभु की कृपा से संभव होते हैं। इसका आयोजन कोई व्यक्ति नहीं करता।



परमात्मा की नजर में सभी भाई-बहन बराबर हैं। परमात्मा जाति, धर्म, देश, सम्प्रदाय से पार है। हमें सभी भाई-बहनों को समान दृष्टि से देखना चाहिए।



दिव्य पाठ प्रभु कृपा का वह आलोक है जिसे करने के लिए किसी भी प्रकार की कठिन तपस्या या साधना की कोई जरूरत नहीं है। यह बड़ा सहज और सरल है।

## गुजरात में नई कैबिनेट ने ली शपथ

26 मंत्रियों ने शपथ ली, हर्ष संघवी बने डिप्टी सीएम, रिवाबा की सरप्राइज एंट्री



@ भारतश्री व्यूरो

गुजरात में हाल ही में बड़ा राजनीतिक बदलाव हुआ है। 17 अक्टूबर 2025 को भूपेंद्र पटेल के नेतृत्व में नई कैबिनेट ने शपथ ली। इसमें हर्ष संघवी को डिप्टी सीएम बनाया गया है। यह बदलाव ऐसे समय में आया है जब स्थानीय चुनाव नजदीक हैं। पुरानी कैबिनेट के 16 मंत्रियों ने 16 अक्टूबर को इस्तीफा दे दिया था। नई कैबिनेट में 26 सदस्य हैं, जिसमें 21 नए चेहरे शामिल हैं। यह बदलाव भाजपा की रणनीति का हिस्सा लगता है, जहां युवा नेताओं को मौका दिया गया है। लेकिन क्या यह बदलाव वाकई लोगों की उम्मीदों पर खरा उतरेगा? आइए देखें कि नई कैबिनेट के सदस्यों की शिक्षा, आपराधिक रिकॉर्ड और संपत्ति के बारे में क्या जानकारी है। यह जानना जरूरी है क्योंकि मंत्री जनता के प्रतिनिधि होते हैं और उनके बैकग्राउंड से सरकार की दिशा पता चलती है।

नई कैबिनेट में मुख्यमंत्री भूपेंद्र पटेल ने खुद जनरल एडमिनिस्ट्रेशन, प्लानिंग, रेवेन्यू और डिजास्टर मैनेजमेंट जैसे महत्वपूर्ण विभाग रखे हैं। डिप्टी सीएम हर्ष संघवी को होम मिनिस्ट्री, पुलिस हाउसिंग, जेल, बॉर्डर सिक्योरिटी जैसे विभाग मिले हैं। रिवाबा जडेजा को प्राइमरी, सेकेंडरी और एडल्ट एजुकेशन का जिम्मा सौंपा गया है। कनुभाई देसाई को फाइनेंस, रुशिकेश पटेल को एनर्जी और पेट्रोकेमिकल्स, जितु वधानी को कुछ अन्य विभाग मिले हैं। अन्य मंत्रियों में अर्जुन मोधवाडिया, नरेश

### नई कैबिनेट के सदस्य: शिक्षा, आपराधिक रिकॉर्ड और संपत्ति का विश्लेषण

नई कैबिनेट के सदस्यों की योग्यता जानना हर नागरिक का हक है। एसोसिएशन फॉर डेमोक्रेटिक रिकॉर्म्स (एडीआर) की रिपोर्ट्स से पता चलता है कि गुजरात के मंत्रियों में शिक्षा का स्तर मिश्रित है। 2022 के विधानसभा चुनावों के हलफनामों के आधार पर, कई मंत्री ग्रेजुएट या पोस्ट-ग्रेजुएट हैं, लेकिन कुछ की शिक्षा कम है। उदाहरण के लिए, डिप्टी सीएम हर्ष संघवी ने सिर्फ 9वीं कक्षा तक पढ़ाई की है। रिवाबा जडेजा ने इंजीनियरिंग की डिग्री ली है। कनुभाई देसाई ग्रेजुएट हैं, जबकि रुशिकेश पटेल ने मेडिकल की पढ़ाई की है। जितु वधानी ने कॉमर्स में ग्रेजुएशन किया है। अर्जुन मोधवाडिया लॉ ग्रेजुएट हैं। नरेश पटेल ने बीकॉम किया है। कुंवरजी बावलिया ने 12वीं पास की है। प्रधुमन वजा डॉक्टर हैं। मनीषा वकील ने पोस्ट-ग्रेजुएशन किया है। प्रफुल्ल पंशेरिया ग्रेजुएट हैं। कांति अमृतिया ने 10वीं पास की है। दर्शना वाघेला ने 12वीं तक पढ़ाई की है। रामेश कटारा ने ग्रेजुएशन किया है। कौशिक वेकरिया ने इंजीनियरिंग की है। प्रवीण माली ने 12वीं पास की है। जयराम गामित ने ग्रेजुएशन किया है। ईश्वर ठाकोर ने 10वीं तक पढ़ाई की है। यह देखकर लगता है कि कैबिनेट में शिक्षा का महत्व है, लेकिन अनुभव और राजनीतिक सक्रियता को भी तरजीह दी गई है। क्या कम पढ़े-लिखे मंत्री प्रभावी ढंग से विभाग चला पाएंगे? यह सवाल उठता है, क्योंकि शिक्षा नीतियां बनाने में ज्ञान जरूरी होता है।

पटेल, कुंवरजी बावलिया, प्रधुमन वजा, मनीषा वकील, प्रफुल्ल पंशेरिया, कांति अमृतिया, दर्शना वाघेला, रामेश कटारा, कौशिक वेकरिया, प्रवीण माली, जयराम गामित, ईश्वर ठाकोर शामिल हैं। यह सूची दिखाती है कि भाजपा ने विभिन्न क्षेत्रों और समुदायों से प्रतिनिधि चुने हैं। लेकिन क्या इनकी योग्यता और ईमानदारी पर सवाल उठते हैं? पुरानी रिपोर्ट्स से पता चलता है कि कई मंत्रियों पर

आपराधिक मामले हैं, जो सोचने पर मजबूर करता है कि राजनीति में सुधार कब आएगा।

इस बदलाव से गुजरात की राजनीति में नई ऊर्जा आ सकती है, लेकिन पुराने मुद्दे जैसे बेरोजगारी, किसानों की समस्या और शहरों में ट्रैफिक अभी भी बाकी हैं। क्या नई कैबिनेट इन पर ध्यान देगी या सिर्फ चुनावी रणनीति का हिस्सा है? यह देखना दिलचस्प होगा।





ORDER ALL TYPES OF :



- POOJA SAMAGRI,
- AYURVEDIC MEDICINE
- AND PRATIMA.



NOW GET AT YOUR HOME ON  
**MNDIVINE.COM**



ORDER NOW



<https://mndivine.com/>

HELPLINE : 9667793986  
( 10AM TO 6PM, MON-SAT )



# दिवाली से पहले दिल्ली में दमघोंटू हवा, दक्षिण में आसमान से आफत

@ शोभित यादव

**दि**वाली से दो दिन पहले ही दिल्ली की हवा फिर जहरीली हो गई है। राजधानी के कई इलाकों में वायु गुणवत्ता सूचकांक (AQI) खतरनाक स्तर पर पहुंच गया है। केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड (CPCB) के अनुसार, शनिवार सुबह 8 बजे दिल्ली का औसत AQI 367 दर्ज किया गया। यानी हवा गंभीर श्रेणी में है। सबसे ज्यादा प्रदूषण आनंद विहार इलाके में दर्ज हुआ, जहां AQI 370 तक पहुंच गया। वहीं, अक्षरधाम में 369, वजीरपुर में 328 और जहांगीरपुरी में 324 दर्ज किया गया। इससे साफ है कि राजधानी के उत्तर और पूर्वी हिस्से में हवा की स्थिति सबसे खराब है। पर्यावरण विशेषज्ञों का कहना है कि तापमान में गिरावट, हवा की रफ्तार कम होना और पराली जलाने की घटनाएं इस प्रदूषण बढ़ोतरी की बड़ी वजह हैं। इसके अलावा, दिवाली से पहले पटाखों की अवैध बिक्री और वाहनों की संख्या में अचानक बढ़ोतरी ने भी स्थिति बिगाड़ी है।

## CAQM ने लागू किया GRAP-I, प्रदूषण से निपटने की आपात योजना

दिल्ली-एनसीआर में बढ़ते प्रदूषण को देखते हुए वायु गुणवत्ता प्रबंधन आयोग (CAQM) ने ग्रेडेड रिस्पांस एक्शन प्लान (GRAP-I) लागू कर दिया है। यह योजना तब लागू होती है जब AQI खराब या उससे ऊपर के स्तर तक पहुंच जाता है। CAQM के अधिकारियों के मुताबिक, शुक्रवार शाम को ही क्षेत्रीय औसत AQI 211 तक पहुंच गया था। इसी को देखते हुए आयोग ने GRAP के पहले चरण को सक्रिय करने का आदेश दिया। इस चरण के तहत दिल्ली और आसपास के इलाकों में कई प्रतिबंध लगाए गए हैं। निर्माण स्थलों पर धूल नियंत्रण के लिए नियमित छिड़काव होंगे। सड़क किनारे मलबा हटाने और पानी का छिड़काव होगा। पुराने और डीजल वाहनों पर निगरानी की जाएगी। खुले में कचरा जलाने पर सख्त रोक होगी। सरकारी एजेंसियों को निर्देश दिया गया है कि वे प्रदूषण के स्रोतों की निगरानी करें और जरूरत पड़ने पर अगले चरण (GRAP-II) की तैयारी रखें।

## लोगों की शिकायतें बढ़ीं

आम लोगों को सांस लेने में दिक्कत और आंखों में जलन जैसी परेशानियां होने लगी हैं। लाजपत नगर के निवासी ने बताया कि सुबह मॉर्निंग वॉक पर निकलना मुश्किल हो गया है। मास्क पहनने के बाद भी धुआं आंखों में चुभता है। उधर, सरकारी अस्पतालों में सांस संबंधी बीमारियों से पीड़ित मरीजों की संख्या बढ़ी है। AIIMS के एक डॉक्टर ने बताया कि “दिवाली के आसपास प्रदूषण के कारण अस्थमा, खांसी और गले में जलन के केस लगभग दोगुने हो जाते हैं।

## दक्षिण भारत में बारिश से हाहाकार, केरल में बांध के गेट खोले गए

जहां उत्तर भारत में प्रदूषण ने परेशान किया है, वहीं



►► **राजधानी में AQI 370 पार, आनंद विहार सबसे प्रदूषित; तमिलनाडु-केरल में भारी बारिश से निचले इलाकों में जलभराव**

►► **दिल्ली में बढ़ा प्रदूषण, दिवाली से पहले ही हवा गंभीर श्रेणी में**

दक्षिण भारत के कई राज्य भारी बारिश की मार झेल रहे हैं। तमिलनाडु और केरल में पिछले तीन दिनों से लगातार बारिश हो रही है। केरल के मुल्लापेरियार बांध का जलस्तर 137 फीट पार कर गया, जिसके बाद प्रशासन ने तीन गेट खोलने का फैसला किया। इससे इडुक्की, पठानमथिट्टा और एर्नाकुलम जिलों के निचले इलाकों में पानी भर गया। कई गांवों में घरों में पानी घुस गया है और राहत टीमें लोगों को सुरक्षित स्थानों पर ले जा रही हैं। राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण (SDMA) ने चेतावनी जारी करते हुए कहा है कि अगले 24 घंटे में भारी से अति भारी बारिश की संभावना बनी हुई है।

## तमिलनाडु के 12 जिलों में मूसलाधार बारिश

कन्याकुमारी, तिरुनेलवेली, तेनकासी, तूतीकोरिन, विरुधुनगर, कांचीपुरम, चेन्नई, चेंगलपट्ट, तिरुवल्लूर, विल्लुपुरम, कुड्डलोर, तिरुवन्नामलाई और रानीपेट जिलों

में भी तेज बारिश रिकॉर्ड की गई है। चेन्नई और कांचीपुरम में सड़कों पर पानी भर गया है, जिससे यातायात बाधित हुआ। स्कूल-कॉलेजों को छुट्टी दी गई है और मछुआरों को समुद्र में न जाने की सलाह दी गई है। तमिलनाडु मौसम विभाग के मुताबिक, बंगाल की खाड़ी में बने लो-प्रेशर सिस्टम के कारण अगले दो दिनों तक बारिश जारी रह सकती है।

## प्रदूषण और मौसम दो विपरीत लेकिन गंभीर संकेत

दिल्ली की जहरीली हवा और दक्षिण भारत की मूसलाधार बारिश दो विपरीत परिस्थितियों का उदाहरण हैं, लेकिन दोनों ही आम जनता के लिए संकेत बन चुके हैं। एक ओर प्रदूषण से सांस लेना मुश्किल हो रहा है, तो दूसरी ओर बारिश से घरों में पानी घुस रहा है। पर्यावरण विशेषज्ञों का मानना है कि यह जलवायु परिवर्तन (Cli-

mate Change) का संकेत है। दिल्ली स्थित सेंटर फॉर साइंस एंड एनवायरनमेंट (CSE) की सुनीता नारायण कहती हैं कि एक तरफ सूखी हवा में धूल और धुआं बढ़ रहा है, दूसरी तरफ समुद्री इलाकों में बेमौसम बारिश और बाढ़ आ रही है। यह सब हमारी विकास नीतियों की असंतुलित दिशा का परिणाम है।

## सरकारों के सामने दोहरी चुनौती

केंद्र और राज्य सरकारों के सामने फिलहाल दोहरी चुनौती है। एक ओर प्रदूषण पर नियंत्रण, दूसरी ओर बारिश और बाढ़ से राहत कार्य। दिल्ली में CAQM और नगर निगमों ने सख्ती बढ़ा दी है, वहीं केरल-तमिलनाडु में NDRF और SDRF की टीमें राहत कार्यों में जुटी हैं। दिल्ली सरकार ने अपील की है कि लोग दिवाली पर पटाखे न जलाएं और सार्वजनिक परिवहन का ज्यादा इस्तेमाल करें। वहीं दक्षिण भारत में प्रशासन ने लोगों से अपील की है कि वे नदियों और जलाशयों के पास न जाएं। दिवाली से ठीक पहले दिल्ली की जहरीली हवा और दक्षिण भारत की बारिश यह दिखाती है कि भारत का मौसम चरम सीमाओं पर पहुंच चुका है।

एक तरफ लोग प्रदूषण से बचने के लिए मास्क पहन रहे हैं, दूसरी ओर दक्षिण में छतों से पानी टपक रहा है।



## पहले चरण के नामांकन पूरे, महागठबंधन में सीटों की तकरार जारी, NDA संगठित मोर्चे पर एकजुट



**6 नवंबर को होगा पहले चरण का मतदान, खेसारी लाल यादव ने छपरा से दाखिल किया पर्चा, 24 करोड़ की संपत्ति घोषित की**

@ आनंद मीणा

**बि**हार विधानसभा चुनाव के पहले चरण की 121 सीटों पर नामांकन प्रक्रिया शुक्रवार को पूरी हो गई। इस चरण में मतदान 6 नवंबर को होगा। नामांकन खत्म होने के बाद भी महागठबंधन के भीतर सीट बंटवारे को लेकर खींचतान जारी है। कांग्रेस, सीपीआईएमएल, वीआईपी और आरजेडी के बीच समन्वय की कमी साफ दिखी। दूसरी ओर, एनडीए ने तालमेल के साथ अपने उम्मीदवार मैदान में उतार दिए हैं।

**महागठबंधन में सीटों की जंग तेज, 121 सीटों पर 125 प्रत्याशी मैदान में**

पहले चरण की 121 सीटों पर महागठबंधन के कुल 125 उम्मीदवारों ने नामांकन किया है यानी कई सीटों पर आपसी टकराव की स्थिति बनी है।

राजद ने 72 सीटों, कांग्रेस ने 24, वामदलों (सीपीआई, सीपीआईएमएल, सीपीएम) ने 21, विकासशील इंसान पार्टी (वीआईपी) ने 6 और इंडियन इंकलूसिव पार्टी (IIP) ने 2 सीटों पर अपने उम्मीदवार उतारे हैं। नामांकन के आखिरी दिन तक राजद ने उम्मीदवारों की आधिकारिक सूची जारी नहीं की, जबकि कांग्रेस और वामपंथी दलों ने अपने प्रत्याशियों का ऐलान कर दिया। महागठबंधन के भीतर 10 सीटों पर सहयोगी दल एक-दूसरे के खिलाफ चुनाव मैदान में हैं। सूत्रों के मुताबिक, कांग्रेस और आरजेडी ने 5 सीटों पर अपने-अपने उम्मीदवार उतारे हैं। तीन सीटों पर कांग्रेस और सीपीआई, जबकि एक सीट पर वीआईपी और आरजेडी आमने-सामने हैं।

**“तेजस्वी फैसला नहीं ले पा रहे”**

कांग्रेस प्रदेश अध्यक्ष राजेश राम ने कहा कि तेजस्वी यादव अब तक सीट शेयरिंग पर अंतिम निर्णय नहीं ले पाए हैं। उन्होंने मीडिया से बातचीत में बताया कि कई सीटों पर क्रॉस डिमांड है। गठबंधन में छह पार्टियां हैं, सबकी अपनी डिमांड है। कुछ घंटे में सब कुछ क्लियर हो जाएगा। इंडिया गठबंधन तेजस्वी जी के नेतृत्व में चुनाव लड़ रहा है और हम उनके अंतिम फैसले की प्रतीक्षा कर रहे हैं। कुटुंबा सीट से राजद प्रत्याशी सुरेश पासवान की चर्चा पर उन्होंने कहा कि यहां कोई फ्रेंडली फाइट नहीं होगी, सीधी लड़ाई होगी।

**“लालू नए कपड़े पहनकर फिर लाना चाहते हैं जंगलराज”**

महागठबंधन जहां सीटों के बंटवारे में उलझा दिखा, वहीं एनडीए पूरी तरह संगठित मोड में दिखा। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह इन दिनों 16 से 18 अक्टूबर तक बिहार दौरे पर हैं। शुक्रवार को उन्होंने पटना के ज्ञान भवन में प्रबुद्धजन सम्मेलन को संबोधित करते हुए कहा कि लालू यादव नए चेहरे और नए कपड़े पहनकर फिर से जंगलराज लाना चाहते हैं। इसे रोकना होगा। “शाह आज पटना में भाजपा नेताओं के साथ बैठक करेंगे और चुनावी रणनीति पर चर्चा करेंगे।

**चिराग पासवान और अमित शाह की मुलाकात**

केंद्रीय मंत्री चिराग पासवान ने पटना में अमित शाह से मुलाकात की। उन्होंने एक्स पर तस्वीरें साझा करते हुए लिखा कि गृहमंत्री से मुलाकात कर बिहार विधानसभा

चुनाव की तैयारी और एनडीए गठबंधन की रणनीति को लेकर विस्तृत चर्चा हुई। पार्टी सूत्रों के मुताबिक, शाह और चिराग की मुलाकात में एनडीए के सीट बंटवारे और संयुक्त प्रचार अभियान की रूपरेखा पर बातचीत हुई।

**“मुझे राज्यसभा नहीं चाहिए, डिप्टी CM बनना है”**

महागठबंधन के घटक विकासशील इंसान पार्टी (VIP) के प्रमुख मुकेश सहनी ने शुक्रवार को बड़ा ऐलान करते हुए कहा कि वे इस बार विधानसभा चुनाव नहीं लड़ेंगे, लेकिन महागठबंधन की सरकार बनाने के लिए पूरी ताकत से प्रचार करेंगे। उन्होंने कहा, हमें राज्यसभा नहीं चाहिए, मुझे डिप्टी सीएम बनना है। मैं इस बार चुनाव नहीं लड़ूंगा, लेकिन गठबंधन को मजबूत करूंगा। सहनी दरभंगा के गौराबौराम विधानसभा से नामांकन करने वाले थे, लेकिन अंतिम समय में उन्होंने अपने भाई संतोष सहनी को टिकट दिया। उन्होंने और भाई से भोगेंद्र सहनी, दरभंगा शहरी क्षेत्र से उमेश सहनी, और गोपालपुर से प्रेम शंकर यादव को मैदान में उतारा है। सूत्रों के अनुसार, वीआईपी को 15 सीटें दी गई हैं, साथ ही एक राज्यसभा और दो एमएलसी सीटों का ऑफर भी मिला है।

**खेसारी लाल यादव बने सबसे चर्चित उम्मीदवार**

पहले चरण के नामांकन के दौरान भोजपुरी सुपरस्टार खेसारी लाल यादव सबसे चर्चित चेहरा बनकर उभरे हैं। छपरा विधानसभा सीट से आरजेडी उम्मीदवार के रूप में पर्चा दाखिल करते हुए उन्होंने

अपने हलफनामे में 24.81 करोड़ की संपत्ति घोषित की है। खेसारी की चल संपत्ति 16.89 करोड़, जबकि अचल संपत्ति 7.91 करोड़ है। उनकी पत्नी के पास 90 लाख की चल और 6.49 करोड़ की अचल संपत्ति है। हलफनामे के अनुसार, उनके पास 5 लाख कैश, पत्नी के पास 2 लाख नकद, कई बैंक खाते, 35 लाख के सोने के गहने, और 3 करोड़ की एक लग्जरी कार है। खेसारी ने कहा कि वे छपरा की मिट्टी से जुड़े हैं और राजनीति में नई ऊर्जा लाने का प्रयास करेंगे।

**समीकरणों की नई बिसात**

राजनीतिक विश्लेषकों के मुताबिक, पहले चरण के चुनाव में महागठबंधन के भीतर का मतभेद उसके लिए नुकसानदेह साबित हो सकता है।

राजनीतिक पर्यवेक्षक प्रो. अरुण मिश्रा के मुताबिक, “एनडीए जहां एकजुट दिख रहा है, वहीं महागठबंधन के कई क्षेत्रीय नेता सीटों और उम्मीदवारी को लेकर खुलकर असंतोष जाहिर कर रहे हैं। यह प्रारंभिक चरण में गलत संदेश भेज सकता है।” नामांकन की प्रक्रिया खत्म होने के बाद अब जांच 19 अक्टूबर, नाम वापसी 21 अक्टूबर, और मतदान 6 नवंबर को होगा। पहले चरण का चुनाव मुख्य रूप से मगध, भोजपुर और सारण क्षेत्रों को कवर करेगा। राजनीतिक दल अब प्रचार और उम्मीदवारों के परिचय अभियान में जुट गए हैं।

बिहार विधानसभा चुनाव के पहले चरण में राजनीतिक सरगमी अपने चरम पर है। जहां एनडीए मजबूत संगठन और समन्वय के साथ मैदान में उतर चुका है, वहीं महागठबंधन अभी भी अंदरूनी उलझनों में फंसा हुआ है।



# कहीं राम की वापसी, कहीं नरकासुर का अंत देशभर में ऐसे मनाई जाती है दिवाली

@ सौम्या चौबे

**भा**रत में जब अंधेरी रात रोशनी से नहा उठती है, तो समझ लीजिए दिवाली आ चुकी है। किसी के घर लक्ष्मी-गणेश की पूजा हो रही है, कहीं काली माँ की आराधना, तो कहीं तेल से नहाने और मिठाई बाँटने की परंपरा निभाई जा रही है। एक ही त्योहार, लेकिन हर राज्य, हर क्षेत्र में इसका रूप, रीति और कहानी थोड़ी अलग है। यही तो भारत की खूबसूरती है।

## अयोध्या की जगमगाती रात

उत्तर भारत की बात करें, तो दिवाली का नाम लेते ही सबसे पहले याद आती है अयोध्या। कहते हैं, जब भगवान राम चौदह साल का वनवास काटकर रावण का वध कर लौटे, तब अयोध्यावासियों ने उनके स्वागत में दीयों से पूरी नगरी को सजाया था। आज भी हर घर में वही परंपरा दोहराई जाती है। उत्तर प्रदेश, बिहार, मध्य प्रदेश और झारखंड तक, घरों की सफाई, लक्ष्मी-गणेश की पूजा और नए खातों की शुरुआत की जाती है।

इस दिन को अंधकार पर प्रकाश की विजय का प्रतीक माना जाता है। लोग मानते हैं कि दिवाली की रात देवी लक्ष्मी घर में प्रवेश करती हैं, इसलिए घरों को जगमग रखा जाता है। मिठाइयाँ बाँटी जाती हैं, बच्चे पटाखे फोड़ते हैं, और लोग एक-दूसरे को शुभकामनाएँ देते हैं।

## पश्चिम भारत में दिवाली का नया साल

अब पश्चिम की ओर चलिए, गुजरात और राजस्थान में दिवाली का मतलब सिर्फ खुशी नहीं, बल्कि नए साल की शुरुआत भी है। यहाँ व्यापारी अपने पुराने खाते बंद करते हैं और चोपड़ा पूजन करते हैं। यानी नए बहीखाते की पूजा। यह परंपरा समृद्ध व्यापार संस्कृति का हिस्सा है। गुजरात में दीयों की जगमग के साथ रंगोली, खील-बताशे और साँझ की आरती का बड़ा महत्व है। राजस्थान में घरों के द्वार पर “तोरण” और “बन्धनवार” लगाए जाते हैं। यहाँ पटाखों की तुलना में दीयों और सजावट पर ज्यादा ध्यान दिया जाता है।

दिलचस्प बात यह है कि महाराष्ट्र और गुजरात के कई हिस्सों में दिवाली के पांच दिन मनाए जाते हैं। धनतेरस, नरक चतुर्दशी, लक्ष्मी पूजन, नए साल (गोवर्धन पूजा) और भाई दूज। हर दिन का अपना अर्थ है। स्वास्थ्य, धन, शक्ति, रिश्ते और सौहार्द का उत्सव।

## दक्षिण भारत में विजय की सुबह

दक्षिण भारत में दिवाली की कहानी कुछ अलग है। तमिलनाडु, आंध्र प्रदेश और तेलंगाना में इसे दीपावली कहा जाता है। यहाँ मान्यता है कि इसी दिन भगवान कृष्ण ने असुर नरकासुर का वध किया था। इसलिए यहाँ त्योहार सुबह से ही शुरू होता है। सूर्योदय से पहले तेल स्नान, फिर नए कपड़े, मिठाइयों का वितरण ये सब जरूरी हिस्से हैं।

तमिलनाडु में दीपावली लेगियम नाम की एक खास औषधीय मिठाई बनाई जाती है, जो सर्दी से बचाती है। आंध्र में इस दिन बच्चों को नए कपड़े और खिलौने देने की परंपरा है। तेलंगाना के कई हिस्सों में रात को दीये



जलाकर भगवान विष्णु और लक्ष्मी देवी की पूजा की जाती है। केरल में हालांकि दिवाली उतनी बड़ी नहीं मानी जाती, क्योंकि वहाँ ओणम मुख्य पर्व है। फिर भी कुछ हिंदू परिवार दीपावली की शाम को दीये जलाकर लक्ष्मी पूजन करते हैं।

## पूर्व में देवी काली की रात

पूर्व भारत में दिवाली की शकल कुछ और है। पश्चिम बंगाल, असम और ओडिशा में इस दिन काली पूजा होती है। कहते हैं, जब राक्षसों ने धरती पर आतंक मचाया, तब माँ काली ने उनका वध किया। इसलिए यहाँ इस रात को काली माँ की शक्ति की पूजा की जाती है। बंगाल में लोग अपने घरों, दुकानों और मंदिरों में धूप, दीप और मंत्रों से अंधकार मिटाने की प्रार्थना करते हैं। असम में दिवाली के दिन लक्ष्मी पूजा और दीपदान की परंपरा है। ओडिशा में बदादिया जलाकर पूर्वजों को याद किया जाता है। यह क्षेत्र दिखाता है कि दिवाली सिर्फ संपन्नता का नहीं, बल्कि शक्ति और स्मरण का पर्व भी है।

## पंजाब में दिवाली का बंदी छोड़ दिवस

उत्तर-पश्चिम भारत में दिवाली को एक और ऐतिहासिक अर्थ मिला है। पंजाब में यह त्योहार गुरु हरगोविंद सिंह जी की जेल से रिहाई की याद में मनाया जाता है।

कहानी है कि गुरु हरगोविंद सिंह जी को जब ग्वालियर किले में कैद किया गया था, तब उन्होंने वहाँ के 52 राजाओं को भी साथ लेकर आजादी पाई थी।



इसलिए इस दिन को कहा जाता है। बंदी छोड़ दिवस। अमृतसर का स्वर्ण मंदिर दिवाली की रात लाखों दीयों से जगमगाता है। संगीत, प्रार्थना और प्रकाश से भरी यह रात पंजाब की पहचान बन चुकी है।

कश्मीर की रोशनी  
कश्मीर में अब भी कुछ हिंदू परिवार शांत तरीके से दिवाली मनाते हैं। दीये जलाना, पूजा करना, उनके लिए यह एक स्मृति और उम्मीद का प्रतीक बन चुका है। पूर्वोत्तर राज्यों की बात करें तो नागालैंड, मिज़ोरम और मेघालय जैसे इलाकों में, जहाँ जनसंख्या मुख्यतः ईसाई है, दिवाली व्यापक रूप से नहीं मनाई जाती।

फिर भी अब शहरों और स्कूलों में बच्चे दीये जलाने लगे हैं। यह त्योहार वहाँ धीरे-धीरे संस्कृतिक उत्सव का रूप ले रहा है।

## परंपरा और आधुनिकता का संगम

समय के साथ दिवाली के रूप में भी बदलाव आया है। अब लोग ईको-फ्रेंडली पटाखे, सोलर दीये और बिना धुएं वाली पूजा सामग्रियाँ इस्तेमाल करने लगे हैं।



बड़े शहरों में ग्रीन दिवाली की मुहिम चल रही है। ऑनलाइन गिफ्ट्स, डिजिटल शुभकामनाएँ और सोशल मीडिया पोस्ट्स ने भी इस त्योहार को नया रंग दे दिया है। लेकिन एक चीज आज भी नहीं बदली। दीयों की वह रोशनी, जो अंधकार मिटाने का संदेश देती है।

## एक त्योहार, कई अर्थ

दिवाली को कोई राम के लौटने की याद में मनाता है। कोई असुर-वध की विजय के रूप में, कोई गुरु की आजादी के प्रतीक के रूप में, तो कोई माँ काली की शक्ति के रूप में। हर राज्य, हर घर में इस त्योहार का अर्थ अलग है। लेकिन भावना एक ही है। अंधकार पर प्रकाश की विजय, बुराई पर अच्छाई की जीत, और दिलों में प्रेम की लौ। अंत में दिवाली की रात जब पूरा देश दीयों से जगमगाता है, तो यह सिर्फ एक त्योहार नहीं रहता। यह बन जाता है भारत की आत्मा का प्रतीक। कहीं दीये मिट्टी के हैं, कहीं पीतल के, कहीं बिजली की लड़ियाँ हैं, तो कहीं घी का दिया पर हर लौ एक ही बात कहती है प्रकाश फैलाओ, क्योंकि यही जीवन है।



## भारत अमेरिका - चीन के साथ कदम से कदम

**भ**ारत सरकार की वर्तमान विदेश नीति बहुत ही ठीक दिशा में जा रही है। जिस तरह भारत यहूदियों और मुसलमान को एक साथ जोड़कर रख रहा है जिस तरह भारत अमेरिका चीन और रूस के साथ संतुलित संबंध बना रहा है जिस तरह भारत अफगानिस्तान और पाकिस्तान के बीच अपनी सफल विदेश नीति चला रहा है यह वास्तव में प्रशंसा योग्य है। अब तक भारत अमेरिका और चीन के पीछे-पीछे चलता था अब भारत उन दोनों के साथ चलने की कोशिश कर रहा है। यह भारत की विदेश नीति का ही कमाल है। इसी तरह भारत ने यह भी घोषणा कर दी है कि विदेशियों का भारत में घेरी से आना और रहना पूरी तरह असंभव कर दिया जाएगा हमें इसके लिए एन आर सी भी लागू करनी पड़ी सरकार पीछे नहीं हटेगी लेकिन कोई घुसपैठ या भारत में रह नहीं पाएगा। आप जानते हैं कि पिछले 60 वर्षों से भारत में घुसपैठियों के दम पर चुनाव के माध्यम से सरकारें बनती रही। वर्तमान में जो विपक्षी दल है वह सफलतापूर्वक चुनाव आयोग को प्रभावित करके विदेशियों को मतदाता बना लेते थे और उनको जोड़कर हमेशा चुनाव जीते रहते थे। अब चुनाव आयोग खड़ा हो गया है विदेशियों को मतदाता सूची से निकाल रहा है अब विपक्षियों के लिए यह कठिन हो जाएगा कि वह विदेशियों की ताकत पर चुनाव जीते। मेरे विचार से विदेशी मुसलमान की ताकत पर चुनाव जीतने का विपक्ष का लंबा सपना टूटने जा रहा है। विपक्ष चारों लाख सर पटक ले लेकिन अब भारत विदेशी मुसलमान की ताकत पर भारतीय राजनीति को आगे नहीं बढ़ने देगा। मेरा यह मानना है कि भारत बहुत सफल विदेश नीति पर चल रहा है और उसे इस नीति पर लगातार आगे चलना चाहिए।

बजरंग गुनि

## तालिबान और भारत

@ नितिन

**वि**पक्ष इसीलिए होता है। वो सरकार को ऐसी बातें याद दिलाता रहता है जो वो भूल जाती है। तालिबान के मामले में वही चल रहा है। तालिबान के रंग ढंग भारतीय लोकतांत्रिक मूल्यों से समानता नहीं खाते। महिला पत्रकारों को कॉन्फ्रेंस में ना बुलाना बस एक झलक है। आखिर कोई तो कारण है कि प्रतिस्पर्धियों की काबुल में लगातार उपस्थिति से बावजूद भारत सरकार ने अफगान सरकार को अब तक मान्यता नहीं दी है।



वैसे ही ढेरों कारण हैं जिनके चलते भारत ने इस बार तालिबान सरकार से उस तरह संबंध विच्छेद भी नहीं किए जैसे पिछली तालिबान सरकार से किए थे। अमेरिका समर्थित अफगान सरकार के गिरने पर भले भारतीय दूतावास बंद हो गया था पर एक टेक्निकल मिशन अपने काम पर लगा रहा। मानवीय आधार पर मदद काबुल पहुंचती रही। अब इसी मिशन को भारतीय विदेश मंत्री दूतावास में बदलनेवाले हैं।

हमें याद रहना चाहिए कि जब कंधार हाईजैक घटा था तब हम तालिबान से दूरी बनाए हुए थे। अचानक से दिल्ली को अहसास हुआ था कि हमारी तरफ से बात करने के लिए कोई नहीं था। आज करीब तीन दशक बाद संभवतया दिल्ली के कूटनीतिक समुदाय को अहसास हो चुका है कि इस तरह अफगानिस्तान से किनारा करके कोई फायदा नहीं होना। जो काम अफगान जनता का है वो उसे करने दिया जाए। वही तय करे कि तालिबान का स्वागत करना है या तथाकथित लोकतांत्रिक सरकारों का। यदि हम अफगान महिलाओं के अधिकारों या वहां के अल्पसंख्यकों की सुरक्षा संबंधी बातें मनवाना चाहते हैं तब भी रास्ता बातचीत है ना कि मुंह फेर कर बैठे रहना। अपने दोस्ताना दबाव का असर हमने दूसरी प्रेस कॉन्फ्रेंस में देखा जहां महिलाएं पत्रकार ना सिर्फ अफगान मंत्री से सवाल पूछ रही हैं बल्कि कायदे से घेर रही हैं।

इस बात को समझने की जरूरत है कि कूटनीतिक आवश्यकताओं की विवशता में अमेरिका सीरिया में एक ऐसे आदमी से हाथ मिला रहा है जिसे वो आतंकी घोषित कर चुका

था। उधर भारत ने कभी तालिबान से उस तरह जंग नहीं की जैसे अमेरिकी करते रहे हैं, इसी कारण ना तालिबान को भारत से उस तरह का शिकवा है जैसा वो अमेरिका या पाकिस्तान से रखता है। उलटा तालिबान भारत की लड़ाई लड़ रहा है। वो ना सिर्फ इस्लामिक स्टेट के प्रभाव को रोक रहा है जिससे दक्षिण एशिया को बराबर खतरा है बल्कि पाकिस्तानी जिहादियों को इस बार अपनी जमीन ट्रेनिंग के लिए देने को तैयार नहीं है। ऑपरेशन सिंदूर में वो प्रो इंडिया था। चीन के बीआरआई प्रोजेक्ट को याद रखें। वो अफगानिस्तान में फैल रहा है। भारत नहीं चाहेगा कि अफगानिस्तान पूरी तरह चीन के पंजे में फंसे, और यही तालिबान चाह रहा है कि ऐसा ना हो। वो भारत जैसी पॉलिसी पर चलना चाहता है जिसमें निर्भरता किसी एक पर ना हो। एक तरफ चीन से मदद ली जाए, दूसरी तरफ भारत से। क्या भारत को वहां अपने पुराने निवेश भूल जाने चाहिए? व्यापार का सारी संभावनाएं बंद कर लेनी चाहिए? इंडियन डायस्पोरा को नज़रअंदाज़ कर देना चाहिए क्योंकि हम तालिबान जैसे अपने मुल्क को चला रहे हैं उससे हम खुश नहीं!! क्या आपको पता है गद्दाफी, असद, सहाम अपने मुल्कों में क्या क्या करते रहे? अमेरिका को पसंद नहीं आ रहा था लेकिन हम कह रहे थे कि अमेरिका कौन होता है तय करनेवाला? इस पूरी बात का मतलब ये नहीं कि आप तालिबान की ज्यादातियों से आंख मूंदें पर ऐसी जटिल बातें बात करने से हल होंगी। ना आप बात करने से पहले उन पर शर्त थोप सकते क्योंकि उनके पास आपका विकल्प है, लेकिन आपके पास अफगानिस्तान का विकल्प कहां है?

## जुबानी तीर

“



सबसे बड़ा उदाहरण है।

जयराम रमेश (नेता, भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस)

“



क्षेत्रीय स्थिरता और मजबूती को भी बढ़ाएगा।

डॉ. एस. जयशंकर (विदेश मंत्री, भारत सरकार)

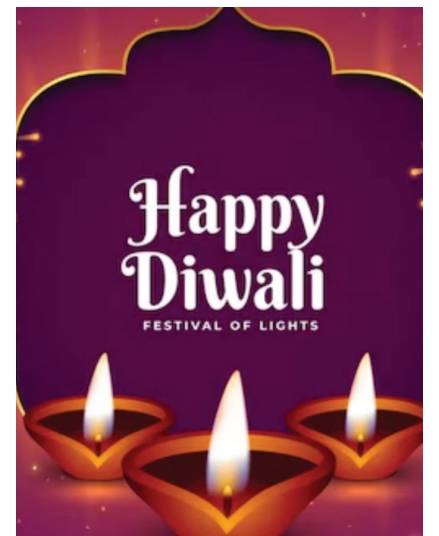
“



पाखंड को उजागर करती है।

महबूबा मुफ्ती (पूर्व मुख्यमंत्री, जम्मू-कश्मीर)

एक तरफ भारत सरकार तालिबान शासित अफगानिस्तान से रिश्ते सुधारने की बात करती है, वहीं दूसरी तरफ अपने ही देश के मुसलमानों को शक की नज़रों से देखती है। यह नीति सरकार के भीतर मौजूद दोहरेपन और





# बाल झड़ना नहीं, आत्मविश्वास झड़ता है जानिए गंजेपन को रोकने के आयुर्वेदिक रहस्य

**क**भी बालों को कृष्ण मुकुट कहा गया था, तो कभी व्यक्तित्व की पहचान। लेकिन आज के समय में यही बाल, तनाव, प्रदूषण, गलत खानपान और जीवनशैली की वजह से सबसे ज्यादा प्रभावित हो रहे हैं। पुरुषों में गंजापन तेजी से बढ़ रहा है, और महिलाएं भी अब इससे अछूती नहीं रहें। आधुनिक ट्रीटमेंट्स और केमिकल युक्त उत्पादों के बीच, लोगों की नजर अब फिर से उस विज्ञान की ओर मुड़ रही है जो हजारों साल पुराना है — आयुर्वेद। आयुर्वेद सिर्फ इलाज नहीं बताता, बल्कि जड़ से समस्या को समझकर शरीर, मन और प्रकृति के बीच सामंजस्य बैठाता है। और यही कारण है कि बाल झड़ने या गंजेपन की समस्या में यह सबसे सुरक्षित और स्थायी उपाय साबित होता है।

## आयुर्वेद के अनुसार गंजेपन का कारण

आयुर्वेद में बाल झड़ने को खालित्य कहा गया है। यह मुख्यतः शरीर के तीन दोषों वात, पित्त और कफ के असंतुलन से होता है। जब पित्त दोष अधिक बढ़ जाता है, तो शरीर में गर्मी बढ़ती है, जिससे बालों की जड़ें कमजोर पड़ जाती हैं। इसके अलावा तनाव, नींद की कमी, अनुचित आहार, शराब, धूम्रपान और केमिकल युक्त शैंपू का अत्यधिक उपयोग भी बालों की प्राकृतिक वृद्धि को रोक देता है।

आयुर्वेद मानता है कि सिर में धातु (टिशू) का संतुलन बिगड़ने पर बाल झड़ना शुरू होता है, और यदि समय रहते संतुलन न बनाया जाए तो गंजापन स्थायी हो सकता है।

## जड़ से इलाज का सिद्धांत

आयुर्वेदिक उपचार सिर्फ बालों की सतह तक सीमित नहीं रहता, बल्कि शरीर की आंतरिक शुद्धि और पोषण पर ध्यान देता है। रक्त शुद्धि, वात-पित्त-कफ संतुलन, और मानसिक शांति तीनों ही इस प्रक्रिया का हिस्सा हैं।

इसलिए, किसी तेल या औषधि का प्रयोग तभी कारगर होता है जब व्यक्ति अपने भोजन, दिनचर्या और मानसिक अवस्था पर भी नियंत्रण रखे।

## आहार से उपचार की शुरुआत

आयुर्वेद कहता है जैसा अन्न, वैसा मन और तन। बालों के लिए सबसे पहले आवश्यक है रक्त और अस्थि धातु का पोषण। इसके लिए हरी सब्जियां, तिल, नारियल, घी, मूंग दाल, आमला, और दूध को नियमित आहार में शामिल करना चाहिए।

अत्यधिक मसालेदार, तला हुआ और डिब्बाबंद भोजन पित्त को बढ़ाते हैं, जो बाल झड़ने का मुख्य कारण है। इसलिए इनसे परहेज करना जरूरी है।

सुबह खाली पेट एक चम्मच त्रिफला चूर्ण को गुनगुने पानी से लेना या रात में एक चम्मच आंवला पाउडर दूध के साथ लेना बालों की जड़ों को भीतर से मजबूती देता है।

## आयुर्वेदिक तेल — बालों का सच्चा अमृत

तेल लगाना केवल परंपरा नहीं, बल्कि आयुर्वेदिक थेरेपी है। भृंगराज तेल, नारियल तेल, आंवला तेल, ब्राह्मी



तेल और नीली तेल (Indigo oil) को आयुर्वेद में सबसे प्रभावी माना गया है। भृंगराज को केशराज यानी बालों का राजा कहा गया है। यह बालों की जड़ों को पोषण देता है, खोपड़ी की गर्मी को कम करता है और नए बालों की वृद्धि में मदद करता है। इसी तरह, ब्राह्मी तेल मानसिक तनाव को कम करता है और नींद को बेहतर बनाता है — जो गंजेपन की रोकथाम में बेहद अहम है। तेल हमेशा हल्का गुनगुना करके लगाना चाहिए और सिर की हल्की मालिश करनी चाहिए। यह सिर्फ रक्तसंचार नहीं बढ़ाता, बल्कि सिर की कोशिकाओं को सक्रिय करता है।

## नस्य कर्म — आयुर्वेद की गुप्त चिकित्सा

आयुर्वेद में एक विशेष उपचार है — नस्य कर्म। इसमें औषधीय तेल या रस नाक के रास्ते से शरीर में डाला जाता है। कहा जाता है कि नाक सिर का द्वार है, इसलिए नस्य के माध्यम से दी गई औषधि सीधे मस्तिष्क और सिर के ऊतकों तक पहुंचती है। नियमित रूप से प्रतिदिन सुबह दो बूँद अनुतैल या भृंगराज तेल नाक में डालने से बालों का झड़ना रुकता है और खोपड़ी को पोषण मिलता है। यह तरीका प्राचीन गुरुकुलों में साधुओं और विद्वानों द्वारा अपनाया जाता था।

## तनाव का संबंध और ध्यान की भूमिका

आधुनिक समय में तनाव, नींद की कमी और मानसिक चिंता गंजेपन के सबसे बड़े कारण बन गए हैं। आयुर्वेद मानता है कि मन की शांति ही शरीर के संतुलन की जड़ है। प्रतिदिन 15 मिनट प्राणायाम और ध्यान करना,



मानसिक स्थिरता लाता है और शरीर में ऑक्सीजन का स्तर बढ़ाता है। इससे बालों को मिलने वाला पोषण बेहतर होता है और झड़ना स्वाभाविक रूप से कम होता है।

## पंचकर्म से संपूर्ण पुनर्जागरण

जब गंजेपन की समस्या गंभीर हो जाती है, तो पंचकर्म थेरेपी सबसे प्रभावी उपाय होती है। इसमें शरीर को अंदर से शुद्ध किया जाता है — वमन, विरेचन, बस्ती, नस्य और रक्तमोक्षण के माध्यम से। विशेषकर शिरोधारा (सिर पर निरंतर तेल की धार डालना) तनाव को दूर करती है और मस्तिष्क की नसों को सक्रिय करती है। पंचकर्म केवल उपचार नहीं, बल्कि रीसेट बटन की तरह कार्य करता है, जिससे शरीर अपनी प्राकृतिक स्थिति में लौट आता है।

## प्राकृतिक हेयर मास्क और घरेलू नुस्खे

आयुर्वेद में कहा गया है कि “जो चीज़ आप खा सकते हैं, वही सिर पर लगाई जा सकती है।” आंवला, मेथी, ब्राह्मी, जटामांसी और एलोवेरा का पेस्ट बनाकर सप्ताह में दो बार लगाने से बालों में प्राकृतिक चमक और मजबूती आती है। मेथी के बीज रातभर भिगोकर पीस लें और दही में मिलाकर सिर पर लगाएं — यह बालों की जड़ों को पुनर्जीवित करता है। इसी तरह, प्याज का रस हल्का-सा नारियल तेल में मिलाकर लगाने से भी गंजेपन के प्रारंभिक चरणों में परिणाम देखने को मिलते हैं।

## केमिकल नहीं, धैर्य और निरंतरता चाहिए

आयुर्वेदिक उपचार तुरंत परिणाम नहीं दिखाते। यह धीरे-धीरे शरीर की जड़ों को स्वस्थ करते हैं। इसलिए नियमितता और धैर्य सबसे महत्वपूर्ण हैं। यदि कोई व्यक्ति रोज 15 मिनट सिर की मालिश करे, पौष्टिक भोजन ले, तनाव कम करे और नस्य या पंचकर्म जैसे उपचारों को अपनाए, तो कुछ ही महीनों में फर्क महसूस किया जा सकता है। गंजापन केवल एक शारीरिक समस्या नहीं, बल्कि आत्मविश्वास पर चोट है। लेकिन इसका समाधान प्रकृति के पास हमेशा से रहा है। आयुर्वेद हमें सिखाता है कि सौंदर्य केवल बाहर नहीं, भीतर से आता है। जब शरीर और मन दोनों संतुलित होते हैं, तभी बाल झड़ने की समस्या स्थायी रूप से दूर होती है। तो अगली बार जब बाल झड़ें, तो केमिकल से नहीं, प्रकृति से बात कीजिए।

क्योंकि असली चमक किसी बोतल में नहीं, बल्कि आयुर्वेद की परंपरा में छिपी है।



# संत प्रीतमदास जी: भगवद्भक्ति का सागर

## भगवद्रस में डूबा जीवन

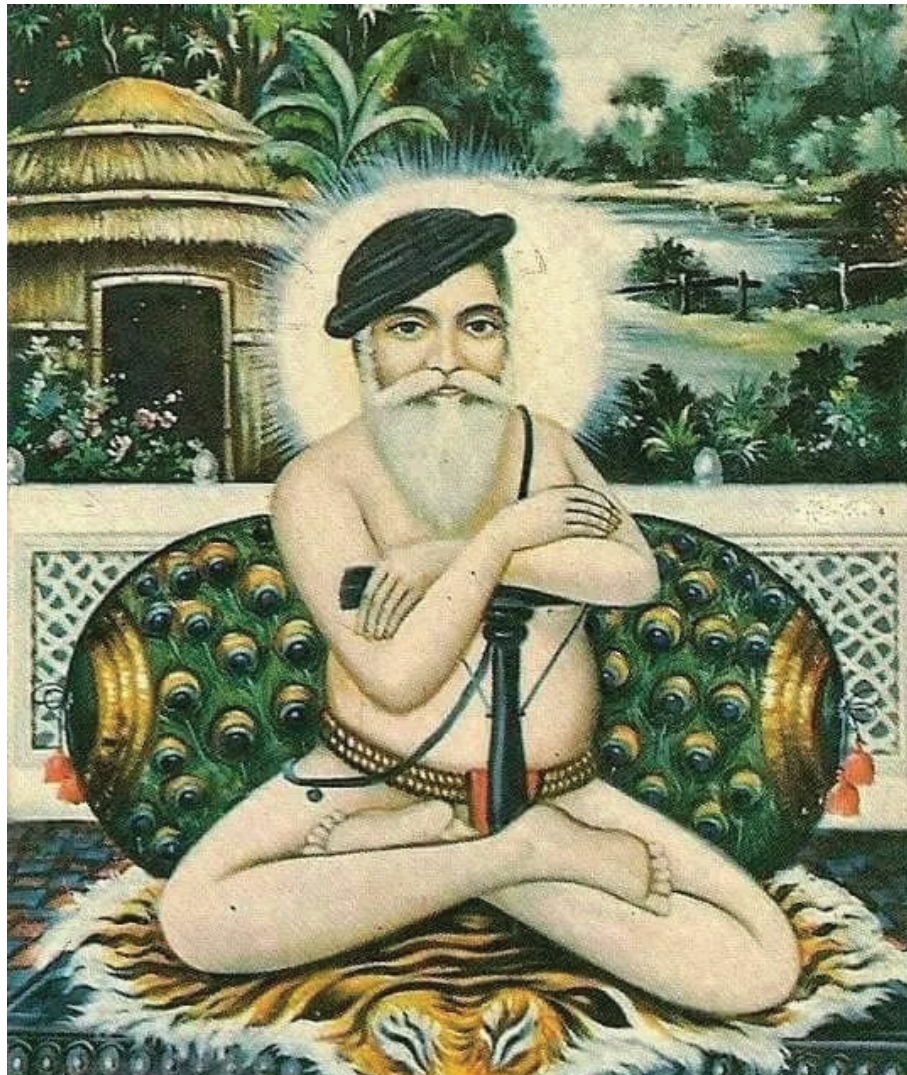
**भ**गवान का प्रेम अनमोल रतन है, जो उनके दरबार में मिलता है, वैसा सुख कहीं और नहीं। चाहे कितनी भी धन-दौलत मिल जाए, जप-तप से बड़ी-बड़ी सिद्धियाँ हासिल हो जाएँ, या असंख्य तीर्थों का पुण्य मिले, पर भगवान के प्रेम के सामने सब कुछ फीका है। जो प्राणी एक बार भी सच्चे मन से श्रीराम के रूप-सौंदर्य का रसपान कर ले, वह जन्म-जन्मांतर के लिए संसार की मोह-माया से मुक्त हो जाता है। भगवद्रस की महिमा ऐसी है कि उसे शब्दों में बयान करना असंभव है—वह चिदानंदमय और सहज दिव्य है। संत प्रीतमदास जी इस भगवद्रस के परम मर्मज्ञ थे। उनका जीवन भगवान के पवित्र रूपस सागर में पूरी तरह डूबा हुआ था, जिसने उनकी जिंदगी को सरस और सार्थक बना दिया।

गुजरात की धरती पर संत प्रीतमदास जी का नाम भक्ति और ज्ञान का पर्याय है। नरसी मेहता की भक्ति भरी वाणी ने जहाँ गुजरात को प्रेमरस से सराबोर किया, वहीं प्रीतमदास जी के ज्ञानमयी साहित्य ने उसमें आध्यात्मिक चेतना का रंग भरा। वह गुजराती साहित्य के प्रमुख स्तंभ संत शामल के समकालीन थे। उनके जीवन और वाणी ने गुजरात के हृदय में भक्ति की सरसता और वैराग्य की सुगंध भर दी। वह साक्षात् वैराग्य के जीवंत स्वरूप थे, जो खुद को साधारण और अकिंचन मानते थे। उनके भक्त और अनुयायी उन्हें प्रीतम स्वामी के नाम से पुकारते थे, और उनके प्रेममय व्यक्तित्व ने हर किसी को आकर्षित किया।

### प्रारंभिक जीवन और भक्ति की शुरुआत

संत प्रीतमदास जी का जन्म गुजरात के वावला गाँव में संवत् 1774 (लगभग 1717 ई.) के आसपास वारोट (भाट) कुल में हुआ। उनके पिता का नाम प्रभातसिंह और माता का नाम जयकुंवरी बाई था। कहा जाता है कि वह जन्म से ही अंधे थे, लेकिन उनकी आत्मा में भक्ति का प्रकाश ऐसा था कि वह हर अंधेरे को मिटा देता था। बचपन से ही उनके मन में साधु-संतों के प्रति सहज प्रेम और भगवद्भक्ति के प्रति गहरी रुचि थी। वह भगवान से जुड़ी बातों में खो जाते थे और पंद्रह-सोलह साल की छोटी उम्र में ही भक्ति भरे सरस पदों की रचना करने लगे।

एक बार उनके गाँव में रामानंदी संप्रदाय के साधुओं की टोली आई। प्रीतमदास जी का मन सहसा उनकी ओर खिंच गया। वह उस टोली के महंत भाईदास जी के पास पहुँचे और मधुर, विनम्र वाणी में उनके चरणों में प्रार्थना की, “महाराज, मुझे वह मार्ग बताइए, जिस पर चलकर मैं परमात्मा का चिंतन कर सकूँ, उनके भजन-कीर्तन में लीन रहूँ। घरवाले मुझे पराए लगते हैं, आप मुझे अपने-से प्रिय हैं।” यह कहकर उन्होंने महंत के चरणों में सिर झुका दिया। भाईदास जी उनके सत्संग-प्रेम और भगवद्भक्ति की तीव्र इच्छा से चकित रह गए। उन्होंने प्रीतमदास जी को मंत्र-दीक्षा दी, और तब से वह संत प्रीतमदास के रूप में प्रसिद्ध हुए।



### वैराग्य और भक्ति का मार्ग

दीक्षा के बाद प्रीतमदास जी ने कोमल उम्र में ही घर-परिवार का त्याग कर दिया और महंत भाईदास जी की मंडली के साथ चूड़ा रायपुर चले गए। कुछ समय तक सत्संग में रमने के बाद वह नदियाद मंडल के सदेसर गाँव में आ बसे। वहाँ वह जीवनभर वीतराग सन्यासी की तरह भजन-कीर्तन में लीन रहे। धीरे-धीरे उनकी ख्याति दूर-दूर तक फैलने लगी। लोग उनके दर्शन के लिए बड़ी संख्या में सदेसर आने लगे। असंख्य जीवों को उन्होंने आत्मिक तृप्ति प्रदान की और ब्रह्मानंद रस का पवित्र रसास्वादन कराया।

संत प्रीतमदास जी रामानंदी संप्रदाय के सच्चे साधक थे। सदेसर में उनका मंदिर सदा सन्यासियों और महात्माओं से भरा रहता था। गंगा-यमुना की पवित्र भूमि सहित भारत के कोने-कोने से संत उनके सत्संग के लिए आते थे। इस सत्संग के प्रभाव से उन्हें हिंदी भाषा का भी अच्छा ज्ञान हो गया था। संवत् 1854 (लगभग 1797 ई.) की वैशाख कृष्ण द्वादशी को वह परमात्मा में लीन हो गए। वह ज्ञानी और रसिक महात्मा

थे, जिनके जीवन ने भक्ति और वैराग्य का अनुपम संगम प्रस्तुत किया।

### भक्ति और वैराग्य की वाणी

संत प्रीतमदास जी की वाणी भक्ति और वैराग्य का अनमोल खजाना है। उन्होंने वेदांत, पुराण और श्रीमद्भागवत में वर्णित भगवत्तत्त्व को अपनी सरस और मधुर वाणी में पिरोया। उनके पदों में श्रीकृष्ण भक्ति का वर्णन इतनी सुंदर और हृदयस्पर्शी शैली में है कि सुनने वाला भावविभोर हो जाता है। उनकी उक्ति थी कि जीवन का असली सौंदर्य सद्भाव और निर्मल ज्ञान में है। हर प्राणी इनके बल पर परमात्मा के प्रेम को पा सकता है।

वह कहते थे, “हरि भजन बिना, दुख दरिया संसार नो पार न आवे।” अर्थात्, भगवान के भजन के बिना संसार रूपी दुखों के सागर को पार नहीं किया जा सकता। केवल वीर आत्मा ही भक्ति के पथ पर चल सकती है, कार्यों के लिए भगवत्तत्त्व का अनुभव दुर्लभ है। उनकी एक और उक्ति है:

“भक्ति अति रे भाई ओवी, तरस्याने पाणी रे जेवी।

भक्ति जुग मा करे नर सोई, जाके घड पर शीश न होई।”

अर्थात्, भक्ति तलवार की धार है, जिस पर केवल वही चल सकता है जो सिर कटाने को तैयार हो। वह सिखाते थे कि भगवान का प्रेम-पथ सबसे अनूठा है। प्रेम रूपी अमृत आँखों में चढ़ जाए, तो फिर उतरता ही नहीं। उनकी एक और पंक्ति है:

**“प्रेम नो पथ छे व्यारो सर्वथी, प्रेम नो पथ छे व्यारो।”**

जे जाणशे ते शिर साटे माणशे, अमा न थी उधारो।” उनका दृढ़ विश्वास था कि सर्वस्व समर्पण से ही भगवत्प्रेम का रस प्राप्त होता है। उनके पदों में गोपी-प्रेम की अनुभूति ऐसी है, मानो वह जीवंत हो। उनके शिष्य उनके मुख से निकले इन पदों को लिख लिया करते थे, जो आज भी भक्तों के लिए प्रेरणा का स्रोत हैं।

### उनकी अमर रचनाएँ

संत प्रीतमदास जी की रचनाएँ गेय और ओजपूर्ण हैं, जो सुविचार और उच्च प्रेरणा देती हैं। उनकी रचनाओं का पाठ करने से मन पवित्र और शुद्ध हो जाता है। उन्होंने ग्रामीण और साधारण जनता के लिए गुजराती भाषा में भगवद्गीता, अध्यात्म रामायण और श्रीमद्भागवत के एकादश स्कंध का सरल और सुबोध रूप प्रस्तुत किया। उनकी प्रमुख रचनाएँ हैं:

सरस गीता: यह उनकी सबसे मधुर रचना है, जिसे पढ़ते ही मन में भक्ति की सरिता बहने लगती है। इस रचना को पढ़कर पाठक की आँखों से अश्रुधारा बहने लगती है।

ज्ञान ककहरा: यह रचना ज्ञान और भक्ति का अनूठा संगम है।

अध्यात्म रामायण: इसमें श्रीराम के आध्यात्मिक स्वरूप का सुंदर चित्रण है।

ब्रह्मलीला: यह रचना भगवान की लीलाओं का रसपूर्ण वर्णन करती है।

ज्ञानप्रकाश: यह रचना आत्मज्ञान और भक्ति के प्रकाश को दर्शाती है।

इन रचनाओं में संत प्रीतमदास जी ने भगवान की भक्ति और जीवन के अनुभवपूर्ण सत्य को सरलता से व्यक्त किया। उनकी रचनाएँ आज भी भक्तों के लिए आध्यात्मिक मार्गदर्शन का स्रोत हैं।

### अनुयायियों और सत्संग का प्रभाव

संत प्रीतमदास जी ने कोई नया पंथ नहीं चलाया, बल्कि जीवन के सत्य और प्रेममय ज्ञान में रमते रहे। उनके चरणों में गुजरात के प्रसिद्ध संत रविसाहब को भी अपार श्रद्धा थी। उनके सत्संग में बैठने वाले लोग भक्ति और वैराग्य के रस में डूब जाते थे। उनका जीवन भक्ति, त्याग और प्रेम का अनुपम उदाहरण है। उनकी वाणी और रचनाएँ आज भी भक्तों के हृदय में भगवान के प्रति प्रेम और श्रद्धा जगाती हैं।



# आईपीएस पूरन कुमार सुसाइड केस: एक पूरा विश्लेषण

**आईपीएस अधिकारी वाई. पूरन कुमार की मौत ने हरियाणा पुलिस और समाज में कई सवाल खड़े कर दिए हैं। यह केस सिर्फ एक मौत नहीं है, बल्कि इसमें जाति भेदभाव, भ्रष्टाचार, पुलिस की अंदरूनी लड़ाई और राजनीतिक दखल जैसे कई पहलू जुड़े हैं। पूरन कुमार एक दलित अधिकारी थे, जिनकी मौत 7 अक्टूबर 2025 को चंडीगढ़ में हुई। उनकी मौत के बाद एक और पुलिसकर्मी की सुसाइड ने मामले को और उलझा दिया। इस लेख में हम सरल भाषा में सब कुछ समझेंगे, दोनों पक्षों को देखेंगे और सोचने पर मजबूर करने वाले पॉइंट्स पर बात करेंगे।**

## पूरन कुमार की मौत: क्या हुआ और कब?

पूरन कुमार हरियाणा कैडर के 2001 बैच के आईपीएस अधिकारी थे। वे 52 साल के थे और दलित समुदाय से आते थे। 7 अक्टूबर 2025 को चंडीगढ़ के सेक्टर 11 में अपने घर में उन्हें गोली लगी हालत में पाया गया। पुलिस का कहना है कि यह सुसाइड था। पूरन ने एक 8 पेज की चिट्ठी छोड़ी, जिसमें उन्होंने कई सीनियर अधिकारियों पर आरोप लगाए। इसमें हरियाणा के डीजीपी शत्रुजीत कपूर और रोहतक के एसपी नरेंद्र बिजारनिया का नाम भी शामिल है।

कहानी की शुरुआत कुछ महीने पहले से है। पूरन रोहतक रेंज के आईजी थे, लेकिन सितंबर 2025 के आखिर में उनका ट्रांसफर पुलिस ट्रेनिंग सेंटर, सुनारिया में हो गया। वे इस ट्रांसफर से परेशान थे। 1 अक्टूबर को वे रोहतक से चंडीगढ़ जा रहे थे, तभी उनकी कार को रोहतक पुलिस ने रोका। उनके पर्सनल सिस्कोरिटी ऑफिसर (पीएसओ) सुशील कुमार को गिरफ्तार कर लिया गया। सुशील पर एक शराब ठेकेदार से 2.5 लाख रुपये मासिक रिश्वत मांगने का आरोप था। ठेकेदार प्रवीण बंसल ने शिकायत की थी कि सुशील पूरन के नाम पर पैसे मांग रहा था। पूरन ने इस गिरफ्तारी पर आपत्ति जताई और डीजीपी व एसपी से फोन पर बात करने की कोशिश की, लेकिन कोई जवाब नहीं मिला।

6 अक्टूबर को सुशील के खिलाफ एफआईआर दर्ज हुई। अगले दिन पूरन की मौत हो गई। उनकी पत्नी अमनीत पी. कुमार, जो आईएएस अधिकारी हैं, उस समय जापान में थीं। वे 8 अक्टूबर को लौटीं और चंडीगढ़ पुलिस में शिकायत दर्ज कराई। उन्होंने डीजीपी और एसपी पर जाति आधारित भेदभाव और उत्पीड़न का आरोप लगाया। अमनीत ने पोस्टमॉर्टम करने से इनकार कर दिया, जब तक आरोपी गिरफ्तार न हों। इससे केस में देरी हुई। आखिरकार 15 अक्टूबर को पोस्टमॉर्टम हुआ, जिसमें गोली से अंदरूनी अंग फटने और खून बहने से मौत की पुष्टि हुई। शरीर पर नाक, कान और मुंह से खून निकलने के निशान थे। 16 अक्टूबर को अंतिम संस्कार हुआ, जिसमें पुलिस ने गार्ड ऑफ ऑनर दिया।

यह घटना अचानक नहीं लगती। पूरन की चिट्ठी में लिखा है कि अगस्त 2020 से उन्हें जाति के आधार



पर परेशान किया जा रहा था। वे कई बार शिकायत कर चुके थे, लेकिन कोई सुनवाई नहीं हुई। क्या यह सिर्फ व्यक्तिगत झगड़ा था या पुलिस सिस्टम की गहरी समस्या? यह सोचने वाली बात है। एक तरफ पूरन जैसे सीनियर अधिकारी की मौत, दूसरी तरफ उनके आरोप जो पुलिस की छवि पर सवाल उठाते हैं।

## पूरन की चिट्ठी: उत्पीड़न और जाति भेदभाव के आरोप

पूरन कुमार की सुसाइड नोट सबसे महत्वपूर्ण दस्तावेज है। इसमें उन्होंने 15 से ज्यादा आईएएस और आईपीएस अधिकारियों का नाम लिया। मुख्य आरोप यह है कि उन्हें दलित होने की वजह से टारगेट किया गया। उन्होंने लिखा कि सीनियर अधिकारी उन्हें सार्वजनिक रूप से अपमानित करते थे, उनकी शिकायतों को नजरअंदाज करते थे और उल्टा उन पर दबाव बनाते थे। पूरन ने कहा कि यह उत्पीड़न इतना बढ़ गया कि वे टूट गए।

उदाहरण के तौर पर, सुशील की गिरफ्तारी को उन्होंने साजिश बताया। पूरन का कहना था कि सुशील को 5 दिन तक अवैध हिरासत में रखा गया, यातना दी गई और पूरन के खिलाफ झूठा बयान देने के लिए मजबूर किया गया। पूरन ने डीजीपी से कई बार संपर्क किया, लेकिन कोई मदद नहीं मिली। उन्होंने इसे “संस्थागत हत्या” जैसा बताया। अमनीत ने भी यही आरोप लगाए। उन्होंने कहा कि उनके पति को एससी होने की वजह से निशाना बनाया गया। एससी/एसटी एक्ट के तहत एफआईआर दर्ज हुई, लेकिन शुरू में कमजोर धाराएं लगाई गईं, जिन्हें बाद में सख्त किया गया।

इस पक्ष से देखें तो केस पुलिस में जाति भेदभाव की समस्या को उजागर करता है। पूरन जैसे सज्जन अधिकारी, जो 25 साल सेवा कर चुके थे, अगर ऐसा महसूस करते हैं, तो जूनियर अधिकारियों का क्या हाल होगा? दलित अधिकारियों के संगठनों ने प्रदर्शन किए, न्याय की मांग की। कांग्रेस और अन्य विपक्षी दलों ने इसे जाति आधारित उत्पीड़न बताया। लेकिन क्या सब कुछ इतना साफ है? पूरन की मौत के बाद कुछ नए खुलासे हुए, जो दूसरे पक्ष को दिखाते हैं। क्या उत्पीड़न के पीछे भ्रष्टाचार का मुद्दा था? यह विचार करने लायक है, क्योंकि सच्चाई हमेशा एक तरफा नहीं होती।



## संदीप लाथर की मौत: भ्रष्टाचार और गैंगस्टर कनेक्शन के आरोप

पूरन कुमार की मौत के एक हफ्ते बाद, 14 अक्टूबर 2025 को एक और सुसाइड ने केस को नया मोड़ दे दिया। एएसआई संदीप लाथर, जो रोहतक साइबर सेल में थे, ने रोहतक-पानीपत रोड पर खुद को गोली मार ली। संदीप सुशील कुमार की गिरफ्तारी वाली टीम में थे। उन्होंने एक 3-4 पेज की चिट्ठी और 6 मिनट का वीडियो छोड़ा, जिसमें पूरन कुमार पर गंभीर आरोप लगाए।

संदीप ने कहा कि पूरन भ्रष्ट अधिकारी थे। उन्होंने रोहतक पोस्टिंग के दौरान महिलाओं का यौन शोषण किया, रिश्वत ली और गैंगस्टर्स से सांठगांठ की। खासकर, गैंगस्टर राव इंदरजीत से 50 करोड़ रुपये का सौदा किया, एक मर्डर केस में नाम हटाने के लिए। राव इंदरजीत ‘जेम्स म्यूजिक’ चलाता है और अमेरिका में छिपा है। उसका कनेक्शन हिमांशु भाऊ गैंग से है। संदीप ने पूरन की पत्नी अमनीत पर भी भ्रष्टाचार का आरोप लगाया। उन्होंने कहा कि पूरन ने जांच से डरकर सुसाइड की, और अब मामले को जाति का रंग देकर छिपाया जा रहा है। संदीप ने डीजीपी कपूर और एसपी बिजारनिया को ईमानदार बताया और कहा कि वे पूरन के खिलाफ थे।

संदीप की मौत के बाद उनकी पत्नी संतोष ने एफआईआर दर्ज कराई। इसमें अमनीत, उनके भाई अमित रत्न (पंजाब के AAP विधायक), सुशील कुमार और एक अन्य पुलिसकर्मी पर सुसाइड के लिए उकसाने का आरोप लगा। हरियाणा सीएम नाथ सिंह सैनी ने परिवार से मिलकर नौकरी, जांच और सम्मानजनक अंतिम संस्कार का वादा किया।

यह पक्ष पूरन को भ्रष्ट दिखाता है। क्या उत्पीड़न के आरोप भ्रष्टाचार छिपाने का तरीका थे? या संदीप पर दबाव था? संदीप ने कहा कि वे सच्चाई के लिए जान दे रहे हैं। लेकिन कुछ लोग कहते हैं कि संदीप की मौत भी साजिश हो सकती है, क्योंकि पूरन तो पहले ही मर चुके थे। दोनों मौतें पुलिस में गंदगी दिखाती हैं – एक तरफ जाति भेद, दूसरी तरफ रिश्वत और गैंगस्टर लिंक। क्या सिस्टम इतना कमजोर है कि अधिकारी खुद को खत्म कर लेते हैं? यह हमें सोचने पर मजबूर करता है।

## जांच की प्रक्रिया: एसआईटी, कोर्ट और सरकारी कदम

दोनों मौतों की जांच चल रही है। पूरन केस में चंडीगढ़ पुलिस ने 9 अक्टूबर को एफआईआर दर्ज की। एसआईटी बनाई गई, जिसकी अगुवाई आईजी पुष्पेंद्र कुमार कर रहे हैं। एसआईटी पूरन के लैपटॉप और टैबलेट की जांच कर रही है, जहां सुसाइड नोट लिखा गया था। कोर्ट ने लैपटॉप सौंपने का आदेश दिया, ताकि डिजिटल सबूत मिलें – जैसे नोट का टाइमस्टैप या बदलाव। पोस्टमॉर्टम रिपोर्ट में गोली से अंदरूनी चोट की पुष्टि हुई।

संदीप केस में रोहतक पुलिस जांच कर रही है। एफआईआर में अमनीत और अमित पर आरोप हैं। हरियाणा सरकार ने दबाव में डीजीपी कपूर को छुट्टी पर भेजा और ओपी सिंह को अतिरिक्त चार्ज दिया। एसपी बिजारनिया को हटाया गया। पूरन के परिवार ने महापंचायत बुलाई और 48 घंटे का अल्टीमेटम दिया। दलित संगठनों ने प्रदर्शन किए। केंद्रीय मंत्री रामदास अठावले, राहुल गांधी ने परिवार से मिलकर न्याय का भरोसा दिया।

विपक्ष जैसे कांग्रेस और INLD ने हाईकोर्ट जज या सीबीआई जांच की मांग की। अमित रत्न ने जांच पर शक जताया। क्या एसआईटी निष्पक्ष रहेगी? या राजनीतिक दबाव प्रभाव डालेगा? दोनों पक्षों की जांच जरूरी है, ताकि सच्चाई सामने आए। लेकिन देरी और विवाद से विश्वास कम होता है। क्या सरकार असली दोषियों को बचाने की कोशिश कर रही है? या यह पुलिस की आंतरिक सफाई है? ऐसे सवाल उठते हैं।

## पुलिस सिस्टम पर सवाल: क्या बदलाव की जरूरत?

यह केस हरियाणा पुलिस की कमजोरियां दिखाता है। एक तरफ जाति भेदभाव, जो एससी अधिकारियों को परेशान करता है। पूरन जैसे लोग अगर सुरक्षित नहीं, तो आम पुलिसकर्मी कैसे रहेंगे? दूसरी तरफ भ्रष्टाचार – रिश्वत, गैंगस्टर से लिंक, महिलाओं का शोषण। संदीप के आरोपों से लगता है कि पुलिस और अपराधी मिले हुए हैं। क्या यह सिर्फ हरियाणा की समस्या है या पूरे देश की?

राजनीतिक कनेक्शन भी साफ हैं। अमनीत आईएएस हैं, अमित विधायक। बीजेपी सरकार पर आरोप है कि वह भ्रष्टाचार छिपाने के लिए जाति का इस्तेमाल कर रही है। लेकिन विपक्ष भी इसे राजनीतिक रंग दे रहा है। प्रदर्शन हो रहे हैं – दलित संगठन, किसान सभा, ट्रेड यूनियन सब शामिल। वे कहते हैं कि यह संगठित अपराध का नेटवर्क है, जो बीजेपी के संरक्षण में चलता है।

सोचिए, दो पुलिसकर्मी मर गए, लेकिन समस्या जड़ में है। क्या ट्रांसफर, छुट्टी से हल निकलेगा? या गहरी जांच और सुधार चाहिए? जैसे जाति भेद रोकने के लिए ट्रेनिंग, भ्रष्टाचार पर सख्त कानून। यह केस हमें बताता है कि सिस्टम में पारदर्शिता की कमी से कितना नुकसान होता है।



# क्या है मां दुर्गा के पाठ का प्रभाव

भगवान ब्रह्मा जी ने पाठ के बारे में कहा है कि यह साक्षात् अद्भुत, अलौकिक विज्ञान है इसका पाठ करने से, इसे जानने व समझने से व धारण करने मात्र से त्रिलोक पर भी विजय प्राप्त की जा सकती है। सबको सारे कष्टों का निवारण होता है। यह पाठ सब पाठों से अधिक सर्वपावन है। यह सभी पुण्यों का दाता व पापों का नाश करने वाला है। यह सब प्रकार के दुखों व रोगों का निवारण करने वाला है। जो साधक नियमित रूप से तीनों संह्याओं में इसका जाप करता है उसे सभी यज्ञों का फल प्राप्त हो जाता है और उसकी समस्त मनोकामनाएं निश्चित रूप से पूर्ण होती हैं। इस छोटे से सरल पाठ से व्यक्ति को धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष की प्राप्ति होती है। वह सभी वेदवेत्ताओं व शास्त्रों के ज्ञाताओं से भी श्रेष्ठतम हो जाता है। इतना ही नहीं साधक जहां भी जाता है धन लाभ प्राप्त करता है। जिस भी अभिष्ट वस्तु का चिंतन करता है वह निश्चित रूप से प्राप्त होती है। वह इस पृथ्वी पर तुलना रहित ऐश्वर्य को प्राप्त करता है। जब तक वन, पर्वत और काननों सहित यह पृथ्वी टिकी रहती है तब तक उसकी पुत्र-पौत्र आदि संतान परंपरा बनी

रहती है। वह अपमृत्यु रहित हो सौ से भी अधिक वर्षों तक जीवित रहता है। इस पाठ से सभी प्रकार की व्याधियां नष्ट हो जाती हैं। सभी प्रकार के विष असर नहीं करते, नष्ट हो जाते हैं। इस पृथ्वी पर जितने भी मारण-मोहन आदि अभिचारिक प्रयोग, यंत्र-तंत्र आदि हैं, सभी पाठ के प्रभाव से नष्ट हो जाते हैं। जितनी भी पृथ्वी व अंतरिक्ष में विचरने वाली नकारात्मक शक्तियां हैं, वे साधक को देखते ही दूर हो जाती हैं अथवा नष्ट हो जाती हैं। पाठ करने वाले साधक को राजा से सम्मान प्राप्त होता है तथा उसके तेज की वृद्धि होती है। यह पाठ देवताओं को भी दुर्लभ है। जीवन के सारे सुख-आनंद भोगने के बाद साधक भगवती महामाया के प्रसाद से नित्य परमपद को प्राप्त होता है तथा सुन्दर दिव्य रूप धारण करता है और कल्याणमय शिव के साथ आनंद का भागी होता है।



## बीजमंत्रों की ताकत से मेरे दुख दूर हुए

मैं इस हालत में नहीं था कि मुंबई से यहाँ तक आ जाऊँ लेकिन गुरुदेव जी की कृपा हुई और मैं आपके समक्ष बैठा हूँ। पूज्य गुरुदेव जी के बीज मंत्रों की यह ताकत है। मेरी जिंदगी में और परिवार में जितने भी दुख आए, वे पूज्य गुरुदेव जी की कृपा से दूर हो गए। पूज्य गुरुदेव जी सब पर ऐसी ही कृपा बनाए रखें।

श्री गजेन्द्र चौहान जी  
महाराष्ट्र धारावाहिक के युधिष्ठिर

## समागम में परम पूज्य सद्गुरुदेव जी ने अवधान के माध्यम से त्वरित दुख निवारण कृपा प्रदान की। प्रस्तुत है कुछ भाई-बहनों के अनुभव-

मैं चल नहीं पा रहा था लेकिन अब दौड़ भी सकता हूँ। श्री हर्षित कपूर ने बताया कि मेरी कमर में दर्द था। कई दिनों से पेट खराब रहता था। आज जब अवधान किया तो इसकी समाप्ति पर मैं बिल्कुल ठीक हो गया। एक बहन ने बताया कि पिछले 4-5 महीनों से मेरे कंधों में बहुत दर्द हो रहा था। मेरी टांगों और कमर में ज्यादा दर्द रहता था। आज अवधान की कृपा से दर्द बिल्कुल नहीं है। मैं अब ठीक से चल सकती हूँ और कंधों को हिला सकती हूँ।

एक भाई ने बताया कि मुझे बहुत परेशानी हो रही थी। क्योंकि मेरी पत्नी से झगड़ा बना रहता है। यह शादी होने के बाद ही शुरू हो गया था। आज जब अवधान किया तो मुझे बहुत शांति मिली है और टेंशन खत्म हो गई। एक बहन ने बताया कि मेरी कमर में और पैरों में बहुत दर्द रहता था। मेरे पैरों की उंगलियां चुनन हो जाती थी। कई बार तो चलना भी दूभर हो जाता था। आज अवधान करने से दर्द खत्म हो गया है और सुम्पन भी खत्म हो गया है।

श्रीराम जी ने बताया कि मुझे बहुत एलेक्जाइटी की समस्या थी। मैं इतना परेशान था कि एक बार मैंने आत्महत्या करने का विचार बना लिया था। आज अवधान करने के बाद मैं चिंता से मुक्त हो गया हूँ।

निरंकारी कालोनी की श्रीमती शारदा जी ने बताया कि मुझे अस्थमा की बहुत ज्यादा समस्या काफी समय से हो रही थी। मुझे सांस लेने में समस्या हो रही थी और भारीपन रहता था। गर्दन के पीछे सरवाइकल की समस्या भी बन जाती थी। अवधान करने से मेरी सारी समस्या खत्म हो गई।

श्री मनोरंजन कुमार जी ने बताया कि मेरे शरीर में बहुत दर्द हो रहा था और खुजली बुरी तरह से हो रही थी। आज जब अवधान किया तो शरीर का दर्द खत्म हो गया और खुजली भी खत्म हो गई।

वैशाली से आई बहन लक्ष्मी जी ने बताया कि मेरी पीठ में बहुत ज्यादा दर्द हो रहा था। मैं लेट नहीं पा रही थी और उठना-बैठना भी मुश्किल हो रहा था। मेरा सिर भारी हो रहा था। अवधान करने के बाद मेरी समस्या खत्म हो गई।

करनाल के श्री विनय कुमार जी ने बताया कि मुझे हार्निया की शिकायत होने के बाद आपरेशन करना पड़ा था। इसके कारण मेरे पेट में दर्द रहता था और साथ ही साथ शरीर में दर्द रहता था। अवधान करने के बाद यह दर्द दर्द खत्म हो गया।

शाहदरा से आई बहन नारायणी देवी जी ने बताया कि मेरी कमर में बहुत दर्द हो रहा था। पेट में भी वायु का प्रकोप हो रहा था और टांगों में कंपन भी था। आज अवधान करने के बाद मैं बिल्कुल स्वस्थ हो गई हूँ।

एक बहन ने बताया कि मुझे बहुत घबराहट हो रही थी, पसीना भी आ रहा था। मुझे बार-बार पेशाब की शिकायत भी हो रही थी, पेट में भी खराबी थी। अवधान करने के बाद सब कुछ ठीक हो गया। अब पेशाब भी बार-बार नहीं आ रहा है, पेट भी ठीक है। मैं बहुत अच्छा महसूस कर रही हूँ।

बिजनौर के श्री खगेश कुमार जी ने बताया कि मेरा शरीर टूट रहा था, उठना-बैठना मुश्किल हो रहा था, सिर में बहुत ज्यादा दर्द हो रहा था। अवधान करने के बाद सारा दर्द खत्म हो गया है और शरीर भी हल्का हो गया है।





# GenZ की लहर

## दुनिया में बदलाव की नई हवा या सिर्फ बहाव?

**आ**ज की दुनिया में युवा पीढ़ी, जिसे हम GenZ कहते हैं, बहुत सक्रिय हो गई है। वे सड़कों पर उतर रहे हैं, सरकारों से सवाल कर रहे हैं और बदलाव की मांग कर रहे हैं। हाल ही में एक महीने के अंदर तीन देशों में GenZ के प्रदर्शनों ने सरकारें बदल दीं। अब पेरू में भी ऐसा ही कुछ हो रहा है, जहां युवा नए राष्ट्रपति से इस्तीफा मांग रहे हैं। इस प्रदर्शन में 1 व्यक्ति की मौत हो गई और 100 से ज्यादा घायल हुए हैं। क्या GenZ वैचारिक रूप से मजबूत हो रहा है या सिर्फ किसी हवा के साथ बह रहा है?

### दुनिया में GenZ की उभरती ताकत

GenZ वे युवा हैं जो 1997 से 2012 के बीच पैदा हुए। वे सोशल मीडिया पर बड़े हुए हैं, जहां वे आसानी से जानकारी शेयर कर सकते हैं और लोगों को इकट्ठा कर सकते हैं। पिछले कुछ सालों में, GenZ ने कई देशों में प्रदर्शन किए हैं। ये प्रदर्शन ज्यादातर आर्थिक समस्याओं, भ्रष्टाचार, बेरोजगारी और पर्यावरण जैसे मुद्दों पर होते हैं। उदाहरण के लिए, 2024 में केन्या और बांग्लादेश में GenZ ने बड़े बदलाव लाए। अब 2025 में मैडागास्कर में भी ऐसा हुआ।

ये युवा सोशल मीडिया का इस्तेमाल करके अपनी बात फैलाते हैं। टिकटॉक, इंस्टाग्राम और एक्स जैसे प्लेटफॉर्म पर वे वीडियो शेयर करते हैं, जो जल्दी वायरल हो जाते हैं। इससे प्रदर्शन बड़े हो जाते हैं। लेकिन सवाल यह है कि क्या ये बदलाव स्थायी हैं? कुछ लोग कहते हैं कि GenZ नई सोच ला रहा है, जबकि कुछ मानते हैं कि वे बस ट्रेंड फॉलो कर रहे हैं। जैसे, केन्या में टैक्स बढ़ाने के खिलाफ प्रदर्शन हुए, जो GenZ ने शुरू किए। वहां सरकार को झुकना पड़ा। इसी तरह, बांग्लादेश में छात्रों ने नौकरी कोटा के खिलाफ आवाज उठाई, जो सरकार गिराने तक पहुंच गई।

2025 में मैडागास्कर में बिजली और पानी की कमी के खिलाफ GenZ ने प्रदर्शन किए, जो सरकार गिराने में सफल रहे। ये घटनाएं दिखाती हैं कि GenZ कितना प्रभावशाली हो सकता है। लेकिन हर प्रदर्शन में हिंसा भी होती है, जैसे पुलिस से झड़प। इससे कई युवा घायल होते हैं या जान गंवाते हैं। फिर भी, वे नहीं रुकते। यह दिखाता है कि वे अपनी समस्याओं से कितने परेशान हैं। लेकिन क्या वे लंबे समय तक एकजुट रह पाते हैं? यह एक बड़ा सवाल है। कुछ विशेषज्ञ कहते हैं कि GenZ की ताकत सोशल मीडिया में है, लेकिन वैचारिक गहराई की कमी हो सकती है। वे जल्दी इकट्ठा होते हैं, लेकिन जल्दी बिखर भी सकते हैं।

दुनिया के कई देशों में GenZ आर्थिक असमानता से नाराज है। जैसे, अमीर-गरीब का फर्क बढ़ रहा है। वे चाहते हैं कि सरकारें उनके लिए काम करें, न कि सिर्फ अमीरों के लिए। नेपाल और इंडोनेशिया में भी ऐसे प्रदर्शन हो रहे हैं। यह लहर अफ्रीका, एशिया और अब दक्षिण अमेरिका तक पहुंच गई है। पेरू इसका नया उदाहरण है।



आइए, देखते हैं कि तीन देशों में क्या हुआ, जहां GenZ ने सरकारें बदलीं।

### तीन देशों की कहानियां: जहां GenZ ने सत्ता हिला दी

पिछले एक महीने में तीन देशों में GenZ के प्रदर्शनों ने सरकारें बदल दीं। पहले बात केन्या की। जून 2024 में केन्या में युवाओं ने फाइनेंस बिल के खिलाफ प्रदर्शन शुरू किए। यह बिल जरूरी चीजों पर टैक्स बढ़ाने वाला था। GenZ ने सोशल मीडिया पर #RejectFinanceBill हैशटैग चलाया। हजारों युवा सड़कों पर उतरे। पुलिस ने गोली चलाई, कई मारे गए, लेकिन प्रदर्शन नहीं रुके। आखिरकार, राष्ट्रपति विलियम रूटो ने बिल वापस ले लिया और कैबिनेट भंग कर दी। यह GenZ की पहली बड़ी जीत थी। वे कहते हैं कि वे भविष्य के लिए लड़ रहे हैं, जहां बेरोजगारी और महंगाई न हो।

दूसरा देश बांग्लादेश। जुलाई-अगस्त 2024 में छात्रों ने सरकारी नौकरियों में कोटा सिस्टम के खिलाफ प्रदर्शन किए। GenZ ने इसे अनुचित बताया। प्रदर्शन इतने बड़े हुए कि प्रधानमंत्री शेख हसीना को इस्तीफा देना पड़ा और देश छोड़ना पड़ा। यहां भी सोशल मीडिया ने बड़ी भूमिका निभाई। युवा वीडियो शेयर करके लोगों को जोड़ते रहे। लेकिन हिंसा में सैकड़ों मारे गए। अब अंतरिम सरकार है, लेकिन GenZ वहां नई व्यवस्था चाहते हैं।

तीसरा देश मैडागास्कर। अक्टूबर 2025 में, यानी हाल ही में, GenZ ने बिजली कटौती और पानी की कमी के खिलाफ प्रदर्शन किए। ये प्रदर्शन इतने तेज हुए कि सेना को हस्तक्षेप करना पड़ा। राष्ट्रपति एंड्री राजोएना को भागना पड़ा और सेना ने सत्ता संभाल ली। यह GenZ की तीसरी बड़ी सफलता थी। यहां युवा कहते हैं कि वे पुरानी व्यवस्था से थक चुके हैं। ये तीनों मामले दिखाते हैं कि GenZ कैसे सरकारों को चुनौती दे रहा है। लेकिन हर जगह अलग मुद्दे थे- टैक्स, कोटा, संसाधन। क्या यह वैचारिक मजबूती है या सिर्फ स्थानीय समस्याओं का विस्फोट? कुछ लोग कहते हैं कि ये युवा वैश्विक ट्रेंड फॉलो कर रहे हैं, जैसे एक देश की सफलता दूसरे को प्रेरित करती है। उदाहरण के लिए, केन्या ने बांग्लादेश को प्रभावित किया, और अब मैडागास्कर। लेकिन क्या



वे लंबे समय के लिए तैयार हैं? सरकार बदलने के बाद नई व्यवस्था बनाना मुश्किल होता है। केन्या में अब भी समस्याएं हैं, बांग्लादेश में अस्थिरता है। मैडागास्कर में सेना की सत्ता क्या स्थायी होगी? ये सवाल विचार करने लायक हैं।

### पेरू का पूरा मामला: नया राष्ट्रपति और सड़कों पर उबाल

अब बात पेरू की। पेरू दक्षिण अमेरिका का एक देश है, जहां हाल ही में GenZ प्रदर्शन कर रहे हैं। यह प्रदर्शन करीब एक महीने से चल रहे हैं। मुख्य मुद्दे हैं भ्रष्टाचार, अपराध, आर्थिक समस्याएं और युवाओं के लिए नौकरियां न होना। हाल ही में, 11 अक्टूबर 2025 को जोस जेरी नए राष्ट्रपति बने। लेकिन सिर्फ 7 दिन बाद, यानी 18 अक्टूबर 2025 तक, युवा उनके इस्तीफे की मांग कर रहे हैं।

प्रदर्शन लीमा शहर में ज्यादा हैं। पुलिस से झड़प में 1 व्यक्ति की मौत हो गई और 100 से ज्यादा घायल हुए। कुछ रिपोर्ट्स में 18 घायल बताए गए, लेकिन कुल आंकड़ा ज्यादा है। एक मशहूर रैपर की मौत ने प्रदर्शनों को और भड़का दिया। युवा कहते हैं कि नई सरकार भी पुरानी समस्याओं को नहीं सुलझा रही। वे पेंशन नियमों से नाराज हैं, जो युवाओं को प्रभावित करते हैं। कई युवा कॉन्ट्रैक्ट जॉब्स में हैं, जहां स्थिरता नहीं है।

राष्ट्रपति जोस जेरी ने इस्तीफा देने से इनकार कर दिया। उन्होंने कहा कि वे लोकतंत्र की रक्षा करेंगे। सरकार ने आपातकाल घोषित करने की बात की है। लेकिन युवा नहीं मान रहे। वे सोशल मीडिया पर वीडियो शेयर कर रहे हैं, जहां पुलिस की हिंसा दिखाई जा रही है। जैसे, पत्थर फेंकना और गोली चलाना। कुछ पोस्ट्स में कहा गया कि सरकार इंटरनेट बंद करने की कोशिश कर रही है, लेकिन युवा नहीं रुक रहे।

यह प्रदर्शन केन्या और बांग्लादेश से प्रेरित लगते हैं। युवा कहते हैं कि वे भविष्य चाहते हैं जहां अपराध न हो, नौकरियां हों और सरकार ईमानदार हो। लेकिन विपक्षी पार्टियां भी इसमें शामिल हैं, जैसे leftist ग्रुप्स। क्या यह शुद्ध GenZ का आंदोलन है या राजनीतिक खेल? पेरू में पहले भी 2022 से प्रदर्शन हो रहे थे, जब पूर्व राष्ट्रपति को हटाया गया। अब नया राष्ट्रपति, लेकिन समस्याएं

वही। यह दिखाता है कि बदलाव आसान नहीं। मौत और घायलों से दुख होता है, लेकिन युवा कहते हैं कि वे बेहतर कल के लिए लड़ रहे हैं।

### GenZ वैचारिक रूप से मजबूत या हवा में बहता हुआ?

अब बड़ा सवाल: क्या GenZ वैचारिक रूप से मजबूत हो रहा है? या सिर्फ किसी धारा में बह जा रहा है? दोनों तरफ तर्क हैं। एक तरफ, GenZ को मजबूत माना जाता है क्योंकि वे मुद्दों पर फोकस करते हैं। जैसे, जलवायु परिवर्तन, समानता और डिजिटल अधिकार। वे पुरानी राजनीति से थक चुके हैं। केन्या, बांग्लादेश और मैडागास्कर में उन्होंने साबित किया कि वे बदलाव ला सकते हैं। वे सोचते हैं ग्लोबली, जैसे एक देश की जीत दूसरे को प्रेरित करती है। पेरू में भी वे अपराध और भ्रष्टाचार जैसे रियल मुद्दों पर लड़ रहे हैं।

लेकिन दूसरी तरफ, कुछ कहते हैं कि GenZ ट्रेंड फॉलो करता है। सोशल मीडिया पर वायरल होने से प्रदर्शन शुरू होते हैं, लेकिन गहराई कम होती है। जैसे, प्रदर्शन के बाद क्या? बांग्लादेश में नई सरकार, लेकिन अस्थिरता। केन्या में टैक्स बिल रुका, लेकिन अर्थव्यवस्था वैसी ही। पेरू में नए राष्ट्रपति से इस्तीफा मांगना जल्दबाजी लग सकता है। क्या वे 7 दिन में फैसला कर सकते हैं? शायद वे भावनाओं में बह रहे हैं। विशेषज्ञ कहते हैं कि GenZ को वैचारिक ट्रेनिंग की जरूरत है, ताकि वे लंबे समय तक लड़ सकें।

संतुलित नजरिया यह है कि GenZ मजबूत हो रहा है, लेकिन अभी सीख रहा है। वे हवा में बह सकते हैं, लेकिन अगर वैचारिक आधार मजबूत हुआ तो दुनिया बदल सकते हैं। पेरू का मामला टेस्ट है। अगर वे एकजुट रहे, तो सफल हो सकते हैं। लेकिन अगर बिखरे, तो सवाल उठेंगे। युवा कहते हैं कि वे जोखिम ले रहे हैं बेहतर जीवन के लिए। क्या वे विचारधारा बना पाएंगे या सिर्फ रिएक्शन देंगे? समय बताएगा।

### आगे की राह: उम्मीद और चुनौतियां

GenZ की यह लहर जारी रहेगी। पेरू में अगर प्रदर्शन बड़े, तो सरकार बदल सकती है। लेकिन बदलाव के बाद क्या? युवाओं को राजनीति में आना होगा, ताकि वे खुद सिस्टम सुधारें। दुनिया में GenZ 2 अरब से ज्यादा हैं, वे भविष्य हैं। लेकिन हिंसा से बचना चाहिए। शांतिपूर्ण प्रदर्शन ज्यादा प्रभावी होते हैं। सरकारों को भी सुनना चाहिए, वरना और उबाल आएगा।

यह मामला हमें सोचने पर मजबूर करता है कि युवा क्या चाहते हैं। क्या हम उन्हें समझ रहे हैं? GenZ मजबूत है, लेकिन सहयोग की जरूरत है। अगर वे वैचारिक रूप से तैयार हुए, तो दुनिया बेहतर बनेगी। लेकिन अगर सिर्फ बहाव में रहे, तो बदलाव अस्थायी होंगे। पेरू देखकर लगता है कि GenZ सीख रहा है। उम्मीद है कि वे सफल होंगे, बिना ज्यादा नुकसान के।



# सोना फिर छू गया नया आसमान, चांदी भी चमकी निवेशक क्या करें अब?



@ रिकू विश्वकर्मा

**सो**ने की चमक एक बार फिर नई ऊंचाइयों पर पहुंच गई है। 17 अक्टूबर को सोना 10 ग्राम पर 1,29,584 के स्तर पर बंद हुआ, जो अब तक का ऑल-टाइम हाई है। दिन के कारोबार के दौरान सोना 1,30,874 तक गया, यानी एक नया रिकॉर्ड। इंडिया बुलियन एंड ज्वेलर्स एसोसिएशन (IBJA) के अनुसार, पिछले दिन की तुलना में सोने की कीमत में 2,113 की बढ़त दर्ज की गई। इसी तरह चांदी ने भी तेजी दिखाई। यह 1,147 उछलकर 1,69,230 प्रति किलो पहुंच गई। 14 अक्टूबर को चांदी 1,78,100 प्रति किलो के अब तक के सर्वोच्च स्तर पर पहुंची थी। इस तरह, कीमती धातुओं में लगातार तेजी का दौर जारी है और बाजार में सवाल गूंज रहा है। क्या अभी निवेश करना ठीक रहेगा?

**इस साल सोना 53,422 और चांदी 83,213 महंगी हुई**

साल 2025 की शुरुआत में, यानी 31 दिसंबर 2024 को 10 ग्राम 24 कैरेट सोना 76,162 का था। अब यह बढ़कर 1,29,584 हो गया है — यानी 53,422 की छलांग। इसी अवधि में चांदी की कीमत 86,017 से बढ़कर 1,69,230 पहुंच गई। यानी 83,213 की वृद्धि। यानी, अगर किसी ने साल की शुरुआत में 1 लाख का सोना या चांदी खरीदी होती तो अब उसकी वैल्यू लगभग 1.7 लाख रुपए हो गई होती।

**क्यों बढ़ रही हैं कीमतें?**

दिवाली और धनतेरस से पहले हर साल सोने की मांग बढ़ जाती है। भारत में पारंपरिक रूप से यह शुभ माना जाता है। इसलिए, भाव चाहे जितने ऊंचे हों, खरीदारी की रस्में नहीं रुकतीं। हालांकि, उच्च दामों के चलते मात्रा में कमी जरूर दिखती है। मिडिल ईस्ट में जारी अस्थिरता, ट्रेड वॉर की आशंका और अमेरिका की नीतियों में अनिश्चितता ने निवेशकों को “सेफ हेवन” यानी सुरक्षित निवेश की ओर मोड़ दिया है। ऐसे में सोना हमेशा सबसे पसंदीदा विकल्प रहा है।

दुनियाभर के कई केंद्रीय बैंक डॉलर पर निर्भरता कम करने के लिए अपने खजाने में सोने का भंडार बढ़ा रहे हैं। वर्ल्ड गोल्ड काउंसिल के आंकड़ों के अनुसार, पिछले एक साल में सेंट्रल बैंकों की गोल्ड खरीद 20% बढ़ी है।

**इस साल 53 हजार रुपए महंगा हुआ सोना,  
चांदी के भाव 83 हजार बढ़े; अगले साल 1.55  
लाख तक जा सकता है भाव**

**चांदी की रफ्तार सोने से तेज क्यों है?**

इस बार चांदी ने निवेशकों को और भी चौंकाया है। सालभर में इसकी कीमत दोगुनी हो गई और अब तक यह सोने से करीब 37% ज्यादा रिटर्न दे चुकी है। सोने की तरह चांदी के गहनों और बर्तनों की मांग भी दिवाली में बढ़ जाती है। डॉलर के मुकाबले रुपए की गिरावट से भी आयातित धातुओं के दाम बढ़े हैं। इसके अलावा चांदी का इस्तेमाल इलेक्ट्रॉनिक्स, सोलर पैनल, और मेडिकल उपकरणों में बढ़ रहा है। इंटरनेशनल एनर्जी एजेंसी के अनुसार, 2030 तक सोलर पैनल इंडस्ट्री में चांदी की खपत 50% तक बढ़ सकती है।

**अगले साल क्या होगा?**

गोल्डमैन सैक्स की रिपोर्ट के अनुसार, 2026 तक सोना 5000 डॉलर प्रति औंस तक जा सकता है। मौजूदा विनिमय दर के हिसाब से यह लगभग 1,55,000 प्रति 10 ग्राम होगा। पीएल कैपिटल के डायरेक्टर संदीप रायचुरा का मानना है कि, “अगले एक साल में सोना 1,44,000 प्रति 10 ग्राम तक पहुंच सकता है। हालांकि, विशेषज्ञ चेतावनी भी देते हैं कि इतनी तेज रफ्तार के बाद शॉर्ट-टर्म में मुनाफा वसूली देखने को मिल सकती है।

**क्या अभी निवेश करना सही है?**

केडिया एडवाइजरी के डायरेक्टर अजय केडिया कहते हैं, “सोना इस साल करीब 60% बढ़

चुका है। शॉर्ट टर्म में इसमें नई तेजी की उम्मीद नहीं, लेकिन लॉन्ग टर्म निवेशक के लिए यह अब भी फायदेमंद एसेट है। वे सलाह देते हैं कि जिन्होंने पहले से निवेश कर रखा है, वे कुछ मुनाफा निकाल सकते हैं।

नए निवेशक धीरे-धीरे SIP या डिजिटल गोल्ड के जरिए एंट्री करें, एकमुश्त नहीं।”

**सोना खरीदते समय रखें ये दो जरूरी बातें ध्यान में**

सर्टिफाइड गोल्ड ही खरीदें। हमेशा BIS हॉलमार्क वाला गोल्ड ही लें। हर ज्वेलरी पर एक अलफान्यूमेरिक कोड होता है जैसे AZ4524। इससे आपको पता चलेगा कि सोना असली है और कितने कैरेट का है। सोना खरीदने से पहले इंडिया बुलियन एंड ज्वेलर्स एसोसिएशन या भरोसेमंद सोर्स से उस दिन का रेट जांच लें। याद रखें 24, 22 और 18 कैरेट सोने के रेट अलग-अलग होते हैं।

सोने और चांदी दोनों ही इस साल रिकॉर्ड पर हैं। त्योहारों की डिमांड, अंतरराष्ट्रीय तनाव और निवेशकों की सुरक्षित ठिकाने की खोज ने कीमती धातुओं को फिर चर्चा के केंद्र में ला दिया है। लेकिन याद रखिए हर उछाल के बाद ठहराव आता है। इसलिए सोना या चांदी में निवेश सोच-समझकर करें, लॉन्ग टर्म नजरिए से करें, और हमेशा प्रमाणित स्रोत से ही खरीदें। क्या पता, आपका खरीदा हुआ यह सोना सिर्फ जेवर न रहे, बल्कि एक स्मार्ट इन्वेस्टमेंट बन जाए।





# पाकिस्तान-अफगानिस्तान संघर्ष

**पा**किस्तान और अफगानिस्तान के बीच का रिश्ता हमेशा से जटिल रहा है। दोनों देश पड़ोसी हैं, लेकिन सीमा पर तनाव अक्सर बढ़ जाता है। आजकल, यानी अक्टूबर 2025 में, यह तनाव फिर से चरम पर पहुंच गया है। पाकिस्तान का कहना है कि अफगानिस्तान में छिपे हुए आतंकवादी उसके यहां हमले कर रहे हैं, जबकि अफगानिस्तान पाकिस्तान पर अपनी सीमा में घुसपैठ और हमलों का आरोप लगाता है। इस संघर्ष में कई लोग मारे गए हैं, और दोनों देशों के लोग परेशान हैं। लेकिन अच्छी बात यह है कि अब बातचीत शुरू हो गई है। कतर की राजधानी दोहा में दोनों पक्षों के प्रतिनिधि मिल रहे हैं, ताकि शांति हो सके।

## सीमा पर आग: हाल की मुख्य घटनाएं

इस साल 2025 में संघर्ष की शुरुआत 9 अक्टूबर को हुई, जब पाकिस्तान ने अफगानिस्तान के कई इलाकों में हवाई हमले किए। पाकिस्तान का कहना था कि वह टीटीपी नाम के पाकिस्तानी तालिबान के ठिकानों पर हमला कर रहा है, जो अफगानिस्तान से उसके यहां हमले की योजना बनाते हैं। हमले काबुल, खोस्त, जलालाबाद और पक्तिका में हुए। काबुल में अब्दुल हक स्क्वायर के पास विस्फोट हुए, और लोग कहते हैं कि उन्होंने विमान की आवाज सुनी। टीटीपी के नेता नूर वाली मेहसूद को निशाना बनाया गया, लेकिन वह बच गए और एक वीडियो में दिखे। टीटीपी ने कहा कि उनके दो बड़े नेता मारे गए। अफगानिस्तान ने इन हमलों को अपनी संप्रभुता का उल्लंघन बताया और विरोध किया।

फिर 11 अक्टूबर को अफगान तालिबान ने जवाब दिया। उनके कमांडर कारी फसिहुद्दीन ने पाकिस्तानी सैन्य चौकियों पर हमला किया। अफगान रक्षा मंत्रालय ने कहा कि यह पाकिस्तानी हमलों का बदला है, लेकिन आगे हमले रोक देंगे। लेकिन पाकिस्तान ने इसे स्वीकार नहीं किया और लड़ाई जारी रही। 12 अक्टूबर को पाकिस्तान ने अफगानिस्तान के कंधार और हेलमंद में ड्रोन हमले किए, जिसमें 19 तालिबान लड़ाके मारे गए, जिनमें कमांडर हाजी नुसरत भी शामिल थे। तालिबान ने कहा कि उन्होंने 58 पाकिस्तानी सैनिक मारे और 25 चौकियां कब्जे में लीं। पाकिस्तान ने दावा किया कि उसने 21 अफगान चौकियां कब्जे में लीं और कई तालिबान मारे। प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ ने कहा कि पाकिस्तान मजबूत जवाब देगा, और आर्मी चीफ असिम मुनीर ने सीमा का दौरा किया।

14 और 15 अक्टूबर को फिर झड़पें हुईं। स्पिन बोलडक में भारी लड़ाई हुई, जहां अफगानिस्तान ने कहा कि 12 नागरिक मारे गए और 100 से ज्यादा घायल। पाकिस्तान ने कहा कि उसने 15-20 तालिबान मारे। काबुल और कंधार में फिर हमले हुए। दोनों पक्षों ने 15 अक्टूबर को 48 घंटे का युद्धविराम घोषित किया, लेकिन 17 अक्टूबर को पाकिस्तान ने फिर हमले किए, जिसमें 10 लोग मारे गए। अब 18 अक्टूबर को दोनों देशों के प्रतिनिधि दोहा में बात कर रहे हैं। अफगानिस्तान की तरफ से रक्षा मंत्री मुल्ला मुहम्मद याकूब नेतृत्व कर रहे हैं। युद्धविराम बढ़ा दिया गया है, लेकिन स्थिति तनावपूर्ण है। सीमा पर टोरखम और चमन बंद हैं, और लोग घर छोड़कर भाग रहे हैं। यह घटनाएं दिखाती हैं कि छोटी सी बात कैसे बड़ा संघर्ष बन जाती है, और हमें सोचना चाहिए



कि क्या दोनों देशों को अपनी सुरक्षा के लिए एक-दूसरे पर भरोसा करना चाहिए।

## आपसी आरोप: दोनों पक्षों के नजरिए

पाकिस्तान का मुख्य आरोप यह है कि अफगानिस्तान टीटीपी को पनाह दे रहा है। टीटीपी पाकिस्तानी तालिबान है, जो पाकिस्तान में हमले करता है। जैसे, 17 अक्टूबर को उत्तर वजीरिस्तान में एक आत्मघाती हमले में 7 पाकिस्तानी सैनिक मारे गए। पाकिस्तान कहता है कि ये हमले अफगानिस्तान से आते हैं, इसलिए वह वहां के ठिकानों पर हमला करता है। विदेश मंत्री इशाक डार और गृह मंत्री मोहसिन नकवी ने कहा कि पाकिस्तान अपनी रक्षा करेगा। राष्ट्रपति आसिफ अली जरदारी ने अफगानिस्तान पर कश्मीर मुद्दे से ध्यान हटाने का आरोप लगाया। पाकिस्तान का कहना है कि उसने 200 से ज्यादा अफगान लड़ाके मारे हैं, और उसके यहां 29 सैनिक शहीद हुए।

दूसरी तरफ, अफगानिस्तान कहता है कि पाकिस्तान बिना वजह उसकी सीमा में घुस रहा है। तालिबान प्रवक्ता जबीहुल्लाह मुजाहिद ने कहा कि पाकिस्तान ने पहले हमला किया, और अफगानिस्तान सिर्फ बचाव कर रहा है। विदेश मंत्री अमीर खान मुत्तकी ने भारत में कहा कि पाकिस्तान को बातचीत करनी चाहिए। अफगानिस्तान का दावा है कि उसने 58 पाकिस्तानी सैनिक मारे, और उसके यहां 43-48 लड़ाके मारे गए। वे कहते हैं कि टीटीपी पाकिस्तान की अपनी समस्या है, और अफगानिस्तान में कोई ठिकाना नहीं है। सीमा को लेकर भी विवाद है। अफगान मंत्री नूरुल्लाह नूरी ने कहा कि पाकिस्तान के साथ कोई आधिकारिक सीमा नहीं है, सिर्फ एक काल्पनिक लाइन है, और अफगान क्षेत्र अटॉक ब्रिज तक जाता है। यह पुराना विवाद है, जो ड्रंड लाइन से जुड़ा है।

दोनों पक्षों के आरोप सुनकर लगता है कि सच बीच में कहीं है। पाकिस्तान को आतंकवाद की समस्या है, लेकिन हमले से अफगानिस्तान की संप्रभुता प्रभावित होती

है। अफगानिस्तान को अपनी जमीन की रक्षा करनी है, लेकिन अगर वह टीटीपी को रोक नहीं पाता, तो पाकिस्तान चुप कैसे रहे? यह सोचने वाली बात है कि क्या दोनों देश मिलकर समस्या सुलझा सकते हैं, या आरोप-प्रत्यारोप से हालात और बिगड़ेंगे।

## लोगों की पीड़ा: नागरिकों और अर्थव्यवस्था पर असर

इस संघर्ष का सबसे बड़ा नुकसान आम लोगों को हो रहा है। संयुक्त राष्ट्र की रिपोर्ट के मुताबिक, एक हफ्ते में अफगानिस्तान में 37 नागरिक मारे गए और 425 घायल हुए। स्पिन बोलडक में 40 लोग मारे गए, जिनमें महिलाएं और बच्चे शामिल थे। पाकिस्तान में भी 4 नागरिक घायल हुए। सबसे दुखद घटना 17 अक्टूबर की है, जब पाकिस्तानी हमलों में 8 अफगान क्रिकेटर मारे गए, जो क्लब स्तर पर खेल रहे थे। 4 और घायल हुए। अफगानिस्तान क्रिकेट बोर्ड ने पाकिस्तान के साथ त्रिकोणीय सीरीज रद्द कर दी। ये युवा क्रिकेटर देश का भविष्य थे, लेकिन युद्ध ने उनके सपने छीन लिए।

सीमा बंद होने से व्यापार रुक गया है। अफगानिस्तान पाकिस्तान से सामान आयात करता है, और पाकिस्तान को अफगानिस्तान से फल-फ्रूट मिलते हैं। अब लोग भुखमरी की कगार पर हैं। चमन शहर में लोग घर छोड़कर भाग रहे हैं। अफगानिस्तान पहले से ही गरीबी और बेरोजगारी से जूझ रहा है, और यह संघर्ष अर्थव्यवस्था को और कमजोर कर रहा है। पाकिस्तान में भी आतंकवाद बढ़ने से सुरक्षा खर्च बढ़ेगा, और विकास रुकेगा।

मानवीय संकट देखकर मन सोचता है कि नेता क्यों नहीं समझते कि युद्ध में सिर्फ मौत और दुख होता है। नागरिकों की जान बचाने के लिए क्या दोनों देशों को अपनी अहंकार छोड़ना चाहिए? यह संघर्ष दिखाता है कि सीमा पर रहने वाले लोग कितने असुरक्षित हैं, और शांति कितनी जरूरी है।

## दुनिया की नजर: अंतरराष्ट्रीय प्रतिक्रियाएं और शांति की उम्मीद

दुनिया इस संघर्ष को चिंता से देख रही है। अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने कहा कि वह आसानी से इस समस्या को सुलझा सकते हैं, क्योंकि उन्होंने कई युद्ध रोके हैं और लाखों जानें बचाई हैं। उन्होंने पाकिस्तान को दोष दिया और मध्यस्थता की पेशकश की। चीन ने दोनों देशों से संयम बरतने को कहा और मदद की पेशकश की। भारत ने अफगानिस्तान की संप्रभुता का समर्थन किया और पाकिस्तान पर आतंकवादियों को पनाह देने का आरोप लगाया। ईरान, कतर, रूस और सऊदी अरब ने भी बातचीत और शांति की अपील की। संयुक्त राष्ट्र ने डिप्लोमेसी पर जोर दिया।

दोहा में बातचीत एक अच्छा कदम है। कतर ने मेजबानी की पेशकश की, और दोनों देश सहमत हुए। अफगानिस्तान ने ईरान से भी बात की, जहां विदेश मंत्री मुत्तकी ने कहा कि पाकिस्तान ने पहले हमला किया। लेकिन पाकिस्तान कहता है कि वह सिर्फ अपनी रक्षा कर रहा है। अंतरराष्ट्रीय दबाव से शायद युद्ध रुक जाए, लेकिन लंबे समय की शांति के लिए दोनों को टीटीपी जैसे मुद्दों पर सहयोग करना होगा।

यह देखकर लगता है कि दुनिया नहीं चाहती कि यह संघर्ष फैले, क्योंकि इससे क्षेत्रीय स्थिरता प्रभावित होगी। लेकिन क्या दोनों देश बाहरी मदद से समस्या सुलझाएंगे, या खुद मिलकर? यह विचार करने लायक है कि शांति के बिना विकास संभव नहीं। उम्मीद है कि दोहा बातचीत सफल हो, और दोनों देश दोस्त बनें।

यह संघर्ष हमें सिखाता है कि पड़ोसियों के बीच विश्वास जरूरी है। अगर दोनों देश मिलकर काम करें, तो आतंकवाद और गरीबी जैसी समस्याएं हल हो सकती हैं। लेकिन अगर तनाव जारी रहा, तो सिर्फ नुकसान होगा। आखिर में, हमें सोचना चाहिए कि क्या युद्ध से कभी कोई खुशहाली आती है।



# आओ फिर से दिया जलाएँ

भरी दुपहरी में आँधियारा  
सूरज परछाईं से हारा

अंतरतम का नेह निचोड़ें, बुझी हुई बाती सुलगाएँ  
आओ फिर से दिया जलाएँ

रुम पड़ाव को समझे मंजिल  
लक्ष्य हुआ आँखों से ओझल

वतर्गन के मोहजाल में आने वाला कल न भुलाएँ  
आओ फिर से दिया जलाएँ

आहुति बाकी यज्ञ अधूरा  
अपनों के दिव्यों ने घेरा

अंतिम जय का वज्र बनाने नव दधीचि लहियाँ गलाएँ  
आओ फिर से दिया जलाएँ

अटल बिरहारी वाजपेयी

यह दीप अकेला

यह दीप अकेला स्नेह भरा  
है गर्व भरा मदमाता, पर इसको भी पंक्ति को दे दो।  
यह जन है—गाता गीत जिन्हें फिर और कौन गाएगा?  
पनडुब्बा—ये मोती सच्चे फिर कौन कृती लाएगा?  
यह समिधा—ऐसी आग हठीला बिरला सुलगाएगा।

यह अद्वितीय—यह मेरा—यह मैं स्वयं विसर्जित—  
यह दीप, अकेला, स्नेह भरा

है गर्व भरा मदमाता, पर इसको भी पंक्ति को दे दो।  
यह मधु है—स्वयं काल की मौना का युग-संचय,

यह गोरस—जीवन-कामधेनु का अमृत-पूत पय,  
यह अंकुर—फोड़ धरा को रवि को तकता निर्भय,

यह प्रकृत, स्वयंभू, ब्रह्म, अयुत : इसको भी शक्ति को दे दो।  
यह दीप, अकेला, स्नेह भरा

है गर्व भरा मदमाता, पर इसको भी पंक्ति को दे दो।  
यह वह विश्वास, नहीं जो अपनी लघुता में भी काँपा,

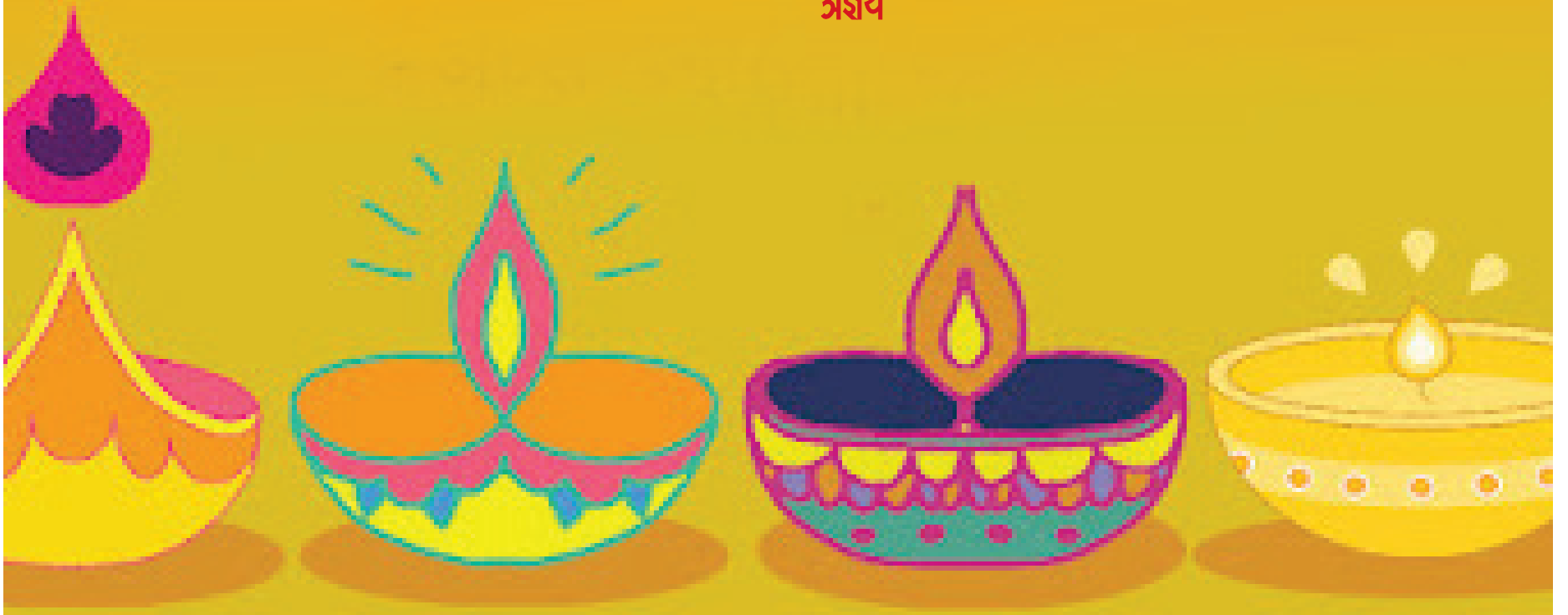
वह पीड़ा, जिसकी गहराई को स्वयं उसी ने नापा;  
कुत्सा, अपमान, अवज्ञा के धुँधुआते कड़वे तम में

यह सदा-द्रवित, चिर-जागरूक, अनुरक्त-नेत्र,  
उल्लम्ब-बाहु, यह चिर-अखंड अपनापा।

जिज्ञासु, प्रबुद्ध, सदा श्रद्धानय, इसको भी शक्ति को दे दो—  
यह दीप, अकेला, स्नेह भरा

है गर्व भरा मदमाता, पर इसको भी पंक्ति को दे दो।

अज्ञेय





# आर्यन वैली का रहस्य: प्रेग्नेंसी टूरिज्म या सिर्फ लोककथा?

ब्रोक्पा समुदाय, विदेशी दावे और तथ्य जब वायरल कहानियों की तह छूती है स्थानीय सच्चाइयाँ

@ मनीष पांडेय

गर्म धूप में बर्फ से ढकी चोटियाँ झिलमिलाती हैं। घाटियों में खिचड़ी-सी नदी बहती है। और ऊपर, हिमालय की ऊँचाइयों के बीच, आर्यन वैली। यह नाम सुनते ही दिमाग में कुछ अलग-सा उठता है: एक ऐसा जगह जहाँ बहुत से लोग मानते हैं कि आखिरी आर्यन रहते हैं, और जहाँ प्रेग्नेंसी टूरिज्म नाम की कहानी समय-समय पर चर्चा में आती है। यह कहानी है ब्रोक्पा समुदाय की। दाह, हानु, दारचिक, गारकोन, बियामा आदि गांवों में रहने वाले लोग। इनका वर्णन अक्सर किया जाता है लंबी काया, गोरी त्वचा, हल्के रंग की आँखों वाले लोगों के रूप में। लोकमानस में यह धारणा बनी हुई है कि ये ब्रोक्पा, सिकंदर महान के साथ आई सेना से वंशज हो सकते हैं, और अतः इनमें आर्यन जीन मौजूद हो सकते हैं।

## दावी क्या है?

कुछ मीडिया रिपोर्ट्स और सोशल मीडिया पोस्ट्स में यह दायिका उठी है कि विदेशी महिलाएँ, खासकर यूरोप से, आर्यन वैली में इस विशेष उद्देश्य से आती हैं कि ब्रोक्पा पुरुषों के साथ संबंध बने, गर्भ धारण हो, ताकि उनके बच्चे “आर्यन” विशेषताएँ विरासत में पाएं। इसके पीछे विश्वास है कि ब्रोक्पा लोगों में कुछ आनुवंशिक विशेषताएँ हैं जो बाकी लोगों में नहीं पायी जाती। कुछ कहानियों में कहा गया है कि पुरुषों को आर्थिक मुआवजा दिया जाता है, या तात्कालिक समझौते होते हैं, ताकि ऐसी गर्भधारण की संभावना बनी रहे। यह कहानी सुर्खियों को आकर्षित करती है क्योंकि इसमें मिश्रित होते हैं: जातीय मिथक, यौन संबंधों की राजनीतिक या सामाजिक तह, और अंतरराष्ट्रीय ध्यान।

## इस दावे की तह में क्या है?

अभी तक कोई ठोस आनुवंशिक अध्ययन सामने नहीं आया है, जो यह संकेत दे कि ब्रोक्पा समुदाय शुद्ध आर्य वंशज हैं, या उनमें कोई विशेष आर्य जीन है। इतिहासकार और आनुवंशशास्त्री इस दावे को मिथक या लोककथा का हिस्सा मानते हैं। व्यवस्थित प्रथा नहीं पायी गई: इस तरह का कोई स्थापित प्रीग्नेंसी टूरिज्म उद्योग नहीं है। अधिकांश जानकारी शब्दों-कहानियों, सोशल मीडिया के अनुभवों, यात्रियों की कहानियों या अफवाहों



पर आधारित है। गांवों के प्रधान या बुजुर्ग इस तरह के दावों को अक्सर “गपशप” या मीडिया का बढ़ा-चढ़ा कर पेश करना बताते हैं।

यात्रा वृत्तांत, वायरल वीडियो, सोशल मीडिया पोस्ट जहाँ आर्यन वंश, सुंदरता या विशेष शारीरिक लक्षणों को प्रमुखता से दिखाया जाता है, वे इन कहानियों को और अधिक रोचक बनाते हैं। कभी-कभी स्थानीय लोग भी इस तरह के दावों को शोहरत और पर्यटकों को लुभाने के लिए इस्तेमाल कर सकते हैं। लोकल प्रतिक्रिया: कई ब्रोक्पा समुदाय के लोग इन दावों को खारिज करते हैं या कहते हैं कि कभी-कभी कोई ऐसा मामला सुना गया हो, पर अब ऐसा नियमित रूप से नहीं होता। अधिकांश स्थानीयों का मानना है कि ये कहानियाँ बाहरी दुनिया में माहौल बनाने के लिए बनी-बनी अफवाहें या कल्पनाएँ हैं।

## क्यों बनी यह कहानी?

इस तरह की कहानियाँ अचानक नहीं उभरतीं; उनके पीछे कई कारण हैं। पुराने समय से ही मनुष्य मिथकों से

प्रेरित होते हैं, किए गए दावों से कि कोई वंश विशिष्ट हो सकता है, किसी विशेष लक्षण के कारण अलग हो सकता है। आर्य शब्द ने भारतीय उपमहाद्वीप में विशेष महत्व पाया है, और इसकी पहचान, राजनीतिक और सामाजिक इतिहास से जुड़ी हुई है। अजनबी लोगों को आकर्षित करने के लिए कुछ जगहों में विशेष इतिहास, राजसी वंश, छिपे हुए सुंदर लोग जैसी कथाएँ प्रचार सामग्री बन जाती हैं। ये कहानियाँ लोगों को वहाँ जाने के लिए प्रेरित करती हैं। चाहे पर्यटन हो, एडवेंचर हो या सिर्फ जिज्ञासा हो।

## सोशल मीडिया और मेसेजिंग ऐप्स

वायरल वीडियो, फोटो एडिट्स, बड़ी बातें, छोटा साक्ष्य ये सब मिलकर कहानी को आगे बढ़ाते हैं। कभी-कभी एक वीडियो या पोस्ट वायरल हो जाता है, और लोग बिना पुष्ट स्रोत के उसे सच मान लेते हैं। कुछ लोग सच में सोचते हैं कि यदि ये विशेष शारीरिक लक्षण हैं, तो क्या उन्हें वैज्ञानिक तरीके से सिद्ध नहीं किया जा सकता? ऐसे सवाल उठाना स्वाभाविक है। आर्यन वैली

की प्रेग्नेंसी टूरिज्म की कहानी रोचक है। जैसे कोई पुरानी कहानी, जहाँ तथ्य और कल्पना मिल गए हों। लेकिन इतने साक्ष्य हैं कि यह नहीं लगता कि यह कोई नियमित, संगठित व्यवसाय है। यह मिथक है जितना कि हकीकत हो सकता है कुछ मामूली अनुभव या घटना हुई हो, लेकिन वो सामान्य नहीं है। ब्रोक्पा समुदाय की पहचान और संस्कृति इससे कहीं ज्यादा समृद्ध है। सिर्फ शारीरिक लक्षण या बाहरी धारणाएँ नहीं। उनकी बोली, रीति-रिवाज, त्योहार, जीवन के तरीके ये सब असली हैं। हमें सतर्क होना चाहिए कि हम ऐसी कहानियों को बढ़ाएं जहाँ या स्वरूप ही मनुष्य की कीमत तय कर दे। अंत में आर्यन वैली की घाटियाँ अभी भी उतनी ही हसीन हैं। बर्फ, आकाश, हवाएँ, संगीत की टीप-टीप, बच्चों की हंसी से गूंजती हुई सड़कें। और ये घाटियाँ अभी भी एक तरह से राज हैं। राज बादलों में, राज कहानियों में, राज उन मिथकों में जो हमें रोचक महसूस कराते हैं। लेकिन जब आप अगली बार कोई वायरल वीडियो देखें कि विदेशी महिलाएँ प्रेग्नेंसी के लिए यहाँ आती हैं।



# फेस्टिव सीजन में कार खरीदने जा रहे हैं? पहले जानिए PDI का मतलब और तरीका डिलीवरी से पहले की ये छोटी सी जांच बचा सकती है लाखों का नुकसान

@ धीरज

**22** सितंबर से लागू हुई नई GST दरों और दिवाली ऑफर्स ने कार बाजार को एक बार फिर जीवंत बना दिया है। कई कंपनियां इस फेस्टिव सीजन में आकर्षक छूट और आसान फाइनेंसिंग ऑफर्स दे रही हैं। अगर आप भी इस सीजन में नई कार खरीदने की सोच रहे हैं, तो सिर्फ गाड़ी चुनना ही काफी नहीं है। डिलीवरी से पहले उसका पूरा निरीक्षण यानी प्री-डिलीवरी इंस्पेक्शन (PDI) करना भी बेहद जरूरी है। अक्सर देखा गया है कि डीलरशिप ग्राहक की जल्दबाजी का फायदा उठाकर स्टॉक में पड़ी पुरानी या हल्के डिफेक्ट वाली कार थमा देते हैं। इसलिए अगर आपने डिलीवरी से पहले कार की जांच नहीं की, तो भविष्य में सर्विस और वारंटी से जुड़े कई झंझट झेलने पड़ सकते हैं।

## क्या है PDI?

PDI यानी Pre-Delivery Inspection एक ऐसी प्रक्रिया है, जिसमें कार की डिलीवरी से पहले उसकी पूरी जांच की जाती है। इस प्रक्रिया का उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि खरीदार को जो कार दी जा रही है, वह बिल्कुल नई, तकनीकी रूप से सही और बिना किसी खामी के है। आमतौर पर डीलर खुद भी यह जांच करता है और कार पर 'PDI पास' का टैग लगाता है, लेकिन खरीदार के लिए यह समझदारी होगी कि वह खुद भी डिलीवरी से पहले एक बार गाड़ी की जांच कर ले। यह जांच कार के रजिस्ट्रेशन से पहले करना सबसे बेहतर रहता है, क्योंकि एक बार गाड़ी आपके नाम पर रजिस्टर हो गई तो किसी भी खामी की जिम्मेदारी डीलर से हट जाती है।

## कब और कहाँ करें PDI?

PDI हमेशा ऐसी जगह करनी चाहिए जहां पर्याप्त रोशनी हो ताकि गाड़ी के हर हिस्से को साफ-साफ देखा जा सके। कोशिश करें कि आपके साथ कोई कार एक्सपर्ट या मैकेनिक हो, जो इंजन या तकनीकी पहलुओं को बेहतर तरीके से समझ सके। अगर एक्सपर्ट न मिले तो खुद भी थोड़ा समय लेकर शांत माहौल में जांच करें। याद रखें, यह प्रक्रिया यह तय करती है कि आपको सचमुच "नई कार" मिल रही है या "शोरूम की पुरानी स्टॉक यूनिट।"

## एक मजबूत चेकलिस्ट तैयार करें

प्री-डिलीवरी इंस्पेक्शन शुरू करने से पहले एक विस्तृत चेकलिस्ट बनाना बेहद जरूरी है। इस सूची में इंजन, पेंटवर्क, इंटीरियर, टायर, फीचर्स और डॉक्यूमेंट्स जैसे सभी बिंदुओं को शामिल करें। इससे जांच करते समय कोई भी हिस्सा छूटेगा नहीं और आप व्यवस्थित तरीके से



पूरी गाड़ी की हालत समझ पाएंगे। एक सही चेकलिस्ट आपको छोटी से छोटी गलती पकड़ने में मदद करेगी और डीलर को भी यह संकेत देगी कि आप एक सजग ग्राहक हैं।

## एक्सटीरियर यानी बाहरी बांडी की जांच

PDI की शुरुआत कार के बाहरी हिस्सों से करें। पूरी गाड़ी के चारों ओर घूमकर देखें कि कहीं कोई स्क्रैच, डेंट या पेंट में असमानता तो नहीं है। खास ध्यान बंपर, दरवाजों के किनारों और हेडलाइट्स के आसपास दें, क्योंकि अक्सर यही हिस्से ट्रांसपोर्ट या डीलर के स्टॉक यार्ड में खरोंच खा जाते हैं। कई बार डीलर इन खरोंचों को पॉलिश से छिपा देता है जो कुछ दिनों बाद वॉशिंग के बाद नजर आने लगते हैं। गाड़ी की बांडी पर हल्के हाथ से स्पर्श करके देखें, अगर कहीं पेंट असमान या उभरा हुआ लगे तो समझिए कि वहां री-पेंटिंग की गई है। कलर शेड को अलग-अलग एंगल से देखकर जांचें। अगर किसी हिस्से का रंग हल्का या गहरा लगे तो यह संकेत है कि वहां रिपेयरिंग हुई है। साथ ही दरवाजों और पैनल्स के गैप को देखें कि वे बराबर हैं या नहीं।

इसके बाद टायरों की बारी आती है। हर टायर की स्थिति जांचें, उनमें हवा सही है या नहीं और रबर पर कोई कट या दरार तो नहीं है। यह भी ध्यान रखें कि टायर नए हों, क्योंकि कुछ डीलर पुरानी यूनिट के टायर बदलने से बचते हैं। साथ ही स्टेपनी यानी स्पेयर व्हील और जैक-किट की भी जांच करें कि वे पूरी हैं और सही हालत में हैं।

## इंटीरियर यानी अंदरूनी हिस्सों की जांच

अब कार के अंदर जाएं और इंटीरियर को ध्यान से देखें। सीटें, डैशबोर्ड, डोर पैनल्स और रूफ लाइनिंग बिल्कुल नई और साफ-सुथरी दिखनी चाहिए। अगर

सीटों पर सिलवटें या धूल के निशान हों, तो यह इस बात का संकेत है कि कार लंबे समय तक शोरूम या स्टॉक यार्ड में खड़ी रही है। फ्लोर मैट्स को हटा कर नीचे का हिस्सा जांचें कि कहीं नमी या गंदगी तो नहीं है। यह पानी की लीकेज या सीलिंग में खराबी का संकेत हो सकता है। सभी मिरर और ग्लास पर क्रेक या स्क्रैच न हों, यह भी देख लें। फिर डैशबोर्ड के सारे स्विच, बटन और फीचर्स जैसे वाइपर, हेडलाइट, इंडिकेटर, विंडो कंट्रोल्स को चालू करके देखें कि वे ठीक से काम कर रहे हैं या नहीं। एयर कंडीशनर को ऑन करें और जांचें कि क्या केबिन जल्दी ठंडा होता है। कई बार लंबे समय तक खड़ी रहने वाली कारों में AC की गैस लीक हो जाती है, जिससे ठंडक ठीक से नहीं आती।

## इंजन, ओडोमीटर और फ्यूल की जांच

इंजन किसी भी वाहन का दिल होता है, इसलिए इसकी जांच बहुत सावधानी से करें। सबसे पहले बोनट खोलें और इंजन ऑयल, ब्रेक फ्लूइड, कूलेंट और वॉशर फ्लूइड के स्तर को देखें। सब कुछ भरा हुआ होना चाहिए। इंजन स्टार्ट करें और कुछ मिनटों तक चालू रहने दें। अगर बोनट के नीचे से कोई असामान्य आवाज, कंपन या धुआं निकलता दिखे तो सतर्क हो जाएं। एक्सिलरेटर को दो-तीन बार दबाकर इंजन की आवाज सुनें। नई कार में आवाज स्मूथ होती है और किसी भी तरह का झटका महसूस नहीं होता। इसके बाद ओडोमीटर देखें। नई कार में रीडिंग 30 से 50 किलोमीटर के बीच होनी चाहिए। इससे ज्यादा होने पर डीलर से पूछें कि गाड़ी टेस्ट ड्राइव में या ट्रांसपोर्ट में ज्यादा चली तो नहीं। अंत में फ्यूल लेवल चेक करें। आमतौर पर डीलर 5 लीटर कॉम्प्लिमेंट्री फ्यूल देते हैं ताकि गाड़ी फ्यूल स्टेशन तक

पहुंच सके। अगर टैंक लगभग खाली है, तो इस बारे में तुरंत जानकारी दें।

## डॉक्यूमेंट्स की पूरी जांच

किसी भी कार की डिलीवरी लेने से पहले उसके डॉक्यूमेंट्स की जांच करना बेहद जरूरी है। इसमें रजिस्ट्रेशन सर्टिफिकेट, इश्योरेंस कवर, वारंटी कार्ड, रोडसाइड असिस्टेंस नंबर और सर्विस बुक शामिल हैं। साथ ही डीलर से "फॉर्म 22" जरूर लें, जिसमें इंजन नंबर, चैसिस नंबर और कार के निर्माण की तारीख दर्ज होती है। इस बात की भी पुष्टि करें कि कार का व्हीकल आइडेंटिफिकेशन नंबर (VIN), इंजन नंबर और चैसिस नंबर सभी दस्तावेजों से मेल खा रहे हैं। कई बार डीलर की लापरवाही से नंबरों में गड़बड़ी हो जाती है जो आगे चलकर रजिस्ट्रेशन या इश्योरेंस में समस्या पैदा कर सकती है।

## टेस्ट ड्राइव जरूर लें

सारी जांच के बाद कार को सड़क पर उतारना न भूलें। डीलर के प्रतिनिधि के साथ एक छोटी टेस्ट ड्राइव लें। इस दौरान स्टीयरिंग, गियर शिफ्टर, ब्रेक और सस्पेंशन को ध्यान से परखें। ड्राइविंग के दौरान कार से किसी तरह की आवाज या कंपन नहीं आना चाहिए। इंजन की आवाज स्मूथ होनी चाहिए और ब्रेक लगाते समय झटका महसूस नहीं होना चाहिए। अगर आप फेस्टिव सीजन में कार खरीद रहे हैं, तो याद रखें कि डिलीवरी से पहले की यह जांच भविष्य की परेशानियों से बचा सकती है। यह केवल औपचारिकता नहीं, बल्कि आपकी मेहनत की कमाई की सुरक्षा है। थोड़ी सी सतर्कता आपको डीलर की चालों से बचा सकती है और आपको एक परफेक्ट, भरोसेमंद गाड़ी की खुशी दिला सकती है।



# जेलेंस्की ने ट्रम्प से मांगी टॉमहॉक मिसाइलें, बदले में देने की पेशकश की हजारों ड्रोन

**‘मैं जंग खत्म करवा सकता हूँ’ — ट्रम्प का दावा, जेलेंस्की बोले- हमें अभी हथियार चाहिए**

@ रिकू विश्वकर्मा

**यू**क्रेन के राष्ट्रपति वोलोदिमिर जेलेंस्की ने शुक्रवार को व्हाइट हाउस में अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प से मुलाकात की। यह मुलाकात रूस-यूक्रेन युद्ध के बीच अमेरिकी समर्थन को लेकर अहम मानी जा रही थी। बैठक में जेलेंस्की ने ट्रम्प से टॉमहॉक मिसाइलें मांगीं, जबकि ट्रम्प ने इस मांग पर हिचकिचाहट जताई। उन्होंने कहा कि मैं चाहता हूँ कि यूक्रेन को कभी टॉमहॉक की जरूरत ही न पड़े। हालांकि, जेलेंस्की ने जवाब में एक दिलचस्प प्रस्ताव रखा उन्होंने टॉमहॉक मिसाइलों के बदले यूक्रेन में बने हजारों ड्रोन देने की पेशकश की। इस पर ट्रम्प ने आंशिक सहमति जताई, लेकिन यह भी स्पष्ट किया कि लंबी दूरी के हथियार यूक्रेन को देने से रूस और अमेरिका के बीच तनाव और बढ़ सकता है।

## यूक्रेन के लिए सबसे जरूरी है मजबूत सुरक्षा गारंटी

बैठक के दौरान जेलेंस्की ने कहा कि यूक्रेन के लोगों के लिए मजबूत सुरक्षा गारंटी ही सबसे अहम है। उन्होंने स्पष्ट कहा कि नाटो की सदस्यता सबसे अच्छा विकल्प है, लेकिन फिलहाल हमारे लिए हथियार ज्यादा जरूरी हैं। जेलेंस्की ने माना कि युद्ध के इस चरण में यूक्रेन को सिर्फ अंतरराष्ट्रीय समर्थन ही नहीं, बल्कि ठोस रक्षा उपकरणों की जरूरत है। उन्होंने ट्रम्प से उम्मीद जताई कि अमेरिका यूक्रेन को ऐसा सहयोग देगा जो रूस की बढ़त को रोक सके।

## मैं चाहता हूँ कि जंग खत्म हो, मिसाइलों की जरूरत न पड़े

बैठक से पहले मीडिया से बात करते हुए ट्रम्प ने दोहराया कि वे जेलेंस्की और रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन के साथ बातचीत कर इस जंग को खत्म करवा सकते हैं। उन्होंने कहा कि आने वाले हफ्तों में बुडापेस्ट में होने वाली समिट में वे दोनों नेताओं से अलग-अलग मुलाकात करेंगे। ट्रम्प ने कहा कि ये दोनों एक-दूसरे को पसंद नहीं करते। लेकिन मैं मध्यस्थ के रूप में काम करूंगा। मुझे विश्वास है कि इस जंग को खत्म किया जा सकता है।

## यूक्रेन को लंबी दूरी के हथियार देना तनाव बढ़ा सकता है

टॉमहॉक मिसाइलों के आदान-प्रदान पर ट्रम्प ने साफ कहा कि अमेरिका अपने हथियार खुद बनाता है, लेकिन यूक्रेन के ड्रोन वाकई बहुत अच्छे हैं। एक पत्रकार ने जब पूछा कि क्या अमेरिका यूक्रेन को ऐसी मिसाइलें देगा जिनसे रूस में हमले हो सकें, तो ट्रम्प ने कहा कि इससे तनाव बढ़ेगा, लेकिन फिर भी मैं इस पर चर्चा करने को तैयार हूँ। ट्रम्प ने यह भी जोड़ा कि वे किसी भी कीमत



पर अमेरिका को सीधे युद्ध में शामिल नहीं करना चाहते, लेकिन शांति स्थापित करने के लिए प्रयास जारी रखेंगे।

## ‘जेलेंस्की ने बहुत मुश्किलें झेली हैं’

ट्रम्प ने जेलेंस्की की तारीफ करते हुए कहा कि उन्होंने बहुत मुश्किल हालात का सामना किया है। हालांकि, जब उनसे पूछा गया कि क्या यूक्रेन को शांति समझौते के लिए अपनी कुछ जमीन रूस को देनी होगी, तो उन्होंने कोई स्पष्ट जवाब नहीं दिया। ट्रम्प ने बस इतना कहा कि युद्ध बहुत मुश्किल है। आप सब कुछ जानते हुए भी कुछ नहीं जानते गौरतलब है कि इससे पहले ट्रम्प ने इस मुद्दे पर दो बार विपरीत बयान दिए थे। अगस्त में उन्होंने कहा था कि जमीन की अदला-बदली से जंग खत्म की जा सकती है। वहीं सितंबर में उन्होंने दावा किया कि “यूक्रेन रूस के कब्जे वाले सभी इलाकों को वापस जीत सकता है।

## ‘पुतिन डील करना चाहते हैं, लेकिन चारों भी चल सकते हैं’

जब ट्रम्प से पूछा गया कि क्या उन्हें डर है कि पुतिन शांति समझौते को टालने की कोशिश कर रहे हैं, तो उन्होंने कहा कि हां, उन्हें इस बात की चिंता है। उन्होंने कहा, “मेरे साथ जिंदगीभर चालाक लोगों ने खेल खेले की कोशिश की, लेकिन मैं हर बार बेहतर निकला। पुतिन भी शांति चाहते हैं, पर मुझे लगता है वे अब डील करना चाहते हैं।” ट्रम्प ने खुद को ऐसे नेता के तौर पर पेश किया जो किसी भी तरह की राजनीतिक चाल का सामना करने में सक्षम हैं। उन्होंने यह संकेत भी दिया कि वे जल्द ही रूस और यूक्रेन के बीच बातचीत का कोई रास्ता निकाल सकते हैं।

## ‘रूस अब पहले जैसी स्थिति में नहीं’

जेलेंस्की ने इस मुलाकात के दौरान दोहराया कि रूस अब पहले जैसी स्थिति में नहीं है। उन्होंने कहा कि हाल के रूसी हमलों ने यूक्रेन के ऊर्जा ढांचे और बिजलीघरों को भारी नुकसान पहुंचाया है, लेकिन इसके बावजूद यूक्रेन की प्रतिरोध क्षमता मजबूत बनी हुई है। उन्होंने बताया कि अमेरिकी ऊर्जा कंपनियां यूक्रेन की मदद के लिए आगे आई हैं। मुझे बड़ी अमेरिकी ऊर्जा कंपनियों से मिलने का मौका मिला, और वे हमारी मदद को तैयार हैं।

## हवाई सुरक्षा प्रणाली और ऊर्जा समझौते पर चर्चा

जेलेंस्की ने बताया कि उन्होंने अमेरिकी रक्षा कंपनियों के साथ भी बैठकें कीं, जिनमें हवाई रक्षा प्रणाली को लेकर विस्तृत चर्चा हुई। उन्होंने कहा कि रूस के मिसाइल हमलों को रोकने के लिए उन्नत तकनीक और सहयोग जरूरी है। इस दौरान जेलेंस्की ने गाजा में सीजफायर समझौते को लेकर ट्रम्प को बधाई भी दी और कहा कि जैसे आपने गाजा में शांति कराई, वैसे ही आपकी मदद से हम यूक्रेन का युद्ध भी खत्म कर सकते हैं। जब जेलेंस्की से पूछा गया कि युद्ध खत्म करने के लिए यूक्रेन क्या रियायतें दे सकता है, तो उन्होंने कहा कि पहले दोनों पक्षों को बैठकर बात करनी चाहिए और युद्धविराम जरूरी है। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि हर दिन हमलों का सामना कर रहे यूक्रेनी लोगों के लिए मजबूत सुरक्षा गारंटी सबसे अहम है।

## पाकिस्तान-अफगानिस्तान संघर्ष सुलझाना आसान

बैठक के दौरान ट्रम्प ने एक और दिलचस्प टिप्पणी

की। उन्होंने कहा कि पाकिस्तान और अफगानिस्तान के बीच चल रहा संघर्ष सुलझाना उनके लिए बहुत आसान है। उन्होंने कहा कि मैं युद्ध रोकना पसंद करता हूँ, क्योंकि मैं लोगों की जान बचाना चाहता हूँ। मैंने लाखों लोगों की जान बचाई है। ट्रम्प ने दावा किया कि उन्होंने अब तक आठ युद्ध सुलझाए हैं, जिनमें भारत-पाकिस्तान, रवांडा और कांगो जैसे देशों के बीच के टकराव शामिल हैं।

## ‘नोबेल नहीं मिला, पर जानें बचाई हैं’

नोबेल शांति पुरस्कार पर बात करते हुए ट्रम्प ने कहा कि हर बार जब मैं कोई युद्ध सुलझाता हूँ, लोग कहते हैं कि मुझे नोबेल मिलेगा। लेकिन मुझे नहीं मिला। यह एक अच्छी महिला को मिला, जिन्हें मैं नहीं जानता। हालांकि मुझे इससे फर्क नहीं पड़ता मैं बस लोगों की जान बचाना चाहता हूँ। उन्होंने कहा कि दुनिया को शक्ति से नहीं, बातचीत से चलाना चाहिए और यह कि अमेरिका को युद्धों से ज्यादा शांति के प्रयासों में भूमिका निभानी चाहिए।

## शांति की बातों के बीच बढ़ते सवाल

व्हाइट हाउस में यह बैठक भले ही सकारात्मक माहौल में खत्म हुई, लेकिन कई सवाल अब भी बाकी हैं क्या अमेरिका सच में यूक्रेन को लंबी दूरी के हथियार देगा? क्या पुतिन बातचीत की मेज पर आएंगे? और क्या ट्रम्प वाकई इस जंग को खत्म कर पाएंगे? फिलहाल, इस मुलाकात ने इतना जरूर दिखाया कि जंग के बीच भी सौदेबाजी और कूटनीति के नए रास्ते खुल रहे हैं। यूक्रेन के लिए यह आशा की किरण हो सकती है। बशर्ते मिसाइलों और ड्रोन की यह डील किसी नए विवाद का रूप न ले ले।





**प्रभु कृपा दुख निवारण समागम**



BY

**Arihanta  
Industries**

- BHRINGRAJ
- AMLA
- REETHA
- SHIKAKAI

100 ML

15 ML



**ULTIMATE  
HAIR  
SOLUTION**

**NO**

ARTIFICIAL  
COLOR  
FRAGRANCE  
CHEMICAL

# KESH VARDAK SHAMPOO

The complete solution of all hair problems:

- Prevent hair fall and make hair follicle strong.
- Promote hair growth.
- Free from all artificial & harmful chemicals like., SLS.
- 100% pure ayurvedic shampoo.
- Suitable for all hair types.



**ORDER ONLINE @ :**

**amazon**

**arihanta.in**

**Arihanta Industries**